
इकाई 4 समग्र माँग*

इकाई की रूपरेखा

- 4.0 उद्देश्य
- 4.1 विषय—प्रवेश
- 4.2 सरल केन्जिय मॉडल की सीमाएँ
- 4.3 समग्र माँग वक्र
 - 4.3.1 समग्र माँग वक्र की व्युत्पत्ति
 - 4.3.2 समग्र माँग वक्र का ढलान
- 4.4 समग्र माँग वक्र में विचलन
- 4.5 समग्र माँग वक्र से गुणक विश्लेषण
- 4.6 सार—संक्षेप
- 4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

4.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि :

- IS-LM अनुसूचियों की मदद से समग्र माँग वक्र अवकलित कर सकें;
- समग्र माँग वक्र समीकरण को पहचान सकें;
- समग्र माँग वक्र के ऋणात्मक ढलान हेतु उत्तरदायी कारकों पर चर्चा कर सकें;
- समग्र माँग वक्र में विचलनों के पीछे कारण स्पष्ट कर सकें; तथा
- गुणक विश्लेषण की मदद से समग्र माँग वक्र में परिवर्तन स्पष्ट कर सकें।

4.1 विषय—प्रवेश

पिछले खंड में हमने IS और LM वक्रों के विषय में जाना जो कि क्रमशः वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार में साम्यावस्था को इंगित करते हैं। इन दोनों बाजारों में युगपत साम्यावस्था की पहचान करने के लिए ही हम दोनों वक्रों को एक साथ लाए। इन IS और LM वक्रों की अंतर्क्रिया ने हमें उत्पादन एवं कीमतों के संतुलन स्तर ज्ञात करने में मदद की। स्मरण करें कि हम कीमत स्तर को स्थिर मानकर चले थे। इस इकाई में हम उक्त अवधारणा में ढील देते हुए यह मानकर चलेंगे कि कीमत स्तर में कुछ बदलाव हैं। हम कीमतें लचीली रख IS-LM विश्लेषण की मदद से समग्र माँग (AD) वक्र अवकलित करेंगे। इसके अलावा, समग्र माँग वक्र की अवस्था के साथ-साथ समग्र उसके ढलान एवं परिवर्तनों पर भी चर्चा की जाएगी।

* प्रो. कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं डॉ. निधि तेवतिया, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

4.2 सरल केन्जिय मॉडल की सीमाएँ

केन्स (Keynes) का कहना था कि द ग्रेट डिप्रेशन अर्थात् महामंदी कोई अर्थव्यवस्था की माल-आपूर्ति क्षमता में कमी की वजह से नहीं आई थी, जो कि श्रम बल, भौतिक पूँजी, अथवा प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है। उसका तर्क था कि अर्थव्यवस्था प्रायः अपनी पूर्ण क्षमता से कम उत्पादन करती है।

ऐसी गिरावट इस वजह से नहीं होती कि तकनीकी रूप से उपलब्ध श्रमिकों और यंत्रों के सहारे उत्पादन करना असंभव होता है। कीन्स के अनुसार, यह गिरावट समग्र अर्थव्यवस्था में माँग की कमी के कारण होती है। अपर्याप्त माँग फर्मों के समक्ष उत्पादनार्थ अपर्याप्त प्रोत्साहनों की ओर अग्रसर करती है। चूँकि वस्तु एवं सेवाओं की कोई माँग नहीं होती, फर्म अपना उत्पादन घटा देती हैं। कीन्स का तर्क था कि अर्थव्यवस्था में जीडीपी का स्तर अर्थव्यवस्था की उस क्षमता से मुख्यतः निर्धारित नहीं होता जिससे कि वह आपूर्ति कर सकती थी बल्कि वह समग्र माँग (AD) के स्तर से निर्धारित होता है। कीन्स के विचार कुछ माह से लेकर कुछ वर्षों की अल्पावधि तक भली-भाँति लागू होते लगते हैं। इस अल्पावधि में दो स्थितियों में से कोई एक देखी जा सकती है : (i) किसी मंदी के दौरान किन्हीं फर्मों में उनकी उत्पादन माँग में गिरावट देखी जा सकती है, तथा (ii) किसी आर्थिक उछाल के दौरान इस भाँति माँगाधिक्य देखा जा सकता है कि फर्मों को उत्पादन करने में दिक्कत आने लगे। बहरहाल, आप याद रखें कि माँग समग्र समष्टि-अर्थशास्त्रीय कथा नहीं कहती। माल एवं सेवाओं की आपूर्ति एक समान रूप से महत्वपूर्ण होती है।

मान लीजिए कि समष्टि-अर्थशास्त्रीय स्तर पर असरकारक एकमात्र समग्र माँग ही है। ऐसी स्थिति में, सरकार और अधिक मुद्रा प्रवाहित कर देने और समग्र माँग बढ़ा देने मात्र से अर्थव्यवस्था को अपनी इच्छानुसार विस्तार दे सकती है। सरकार राजकीय व्यय में बड़ी वृद्धि करने अथवा उपभोग बढ़ाने के लिए बड़ी कर-कटौतियाँ करने हेतु कानून बनाने का सहारा ले सकती है। अर्थव्यवस्थाओं के समक्ष प्रामाणिक सीमाएँ होती ही हैं कि वे कहाँ तक उत्पादन कर सकती हैं। ये सीमाएँ श्रम बल, भौतिक पूँजी, प्रौद्योगिकी, और बाजार आधार या ढाँचा से निर्धारित होती हैं जो कि इन उत्पादन कारकों को एक स्थान पर ले आती हैं। संस्थानिक व्यवस्था, नियम एवं विनियम भी महत्वपूर्ण होते हैं। ये कारक इस बात पर दबाव बनाते हैं कि कोई अर्थव्यवस्था समष्टि-अर्थशास्त्रीय स्तर पर क्या उपलब्ध करा सकती है। इस दृष्टि से, इन कारकों को समष्टि अर्थशास्त्र संबंधी चर्चा में एक समान ही महत्व दिया जाना चाहिए।

सरल केन्जिय मॉडल में लुप्त बिंदु को एक अन्य दृष्टिकोण से देखें तो यह मुद्रा बाजार को देखें बिना ही समग्र माँग पर चर्चा करता है। 'केन्जिय क्रॉस' ब्याज दर और मुद्रा बाजार के बीच संबंध को अनदेखा कर, अर्थव्यवस्था के वास्तविक कार्यक्षेत्र की ही बात करता है। अतः, यह विश्लेषण 'व्यापक' के स्थान पर 'आंशिक' ही रहता है और समग्र माँग को कार्यक्षेत्रों (वस्तु बाजार व मुद्रा बाजार) के बीच संतुलन की दृष्टि से समझना आवश्यक हो जाता है।

स्मरण करें कि अर्थव्यवस्था में साम्यावस्था का IS और LM वक्रों के माध्यम से विश्लेषण किया जाता है। तदनुसार, हम AD वक्र IS-LM मॉडल से अवकलित करते हैं।

4.3 समग्र माँग वक्र

हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि समग्र माँग वक्र अर्थव्यवस्था में विद्यमान सभी बाजार माँग वक्रों का कुल योग नहीं होता। इसके अलावा, यह स्वयं कोई बाजार माँग वक्र नहीं होता (जैसा कि आपने व्यक्ति अर्थशास्त्र में पढ़ा)।

यह अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत समग्र उत्पादन के साथ अर्थव्यवस्था में समग्र कीमत स्तर (P) के बीच संबंध दर्शाता है। माल बाजार और मुद्रा बाजार का अध्ययन करते समय, हमने कीमत स्तर स्थिर रखा था। इस इकाई में, उक्त अवधारणा में ढील देते हुए, हम लचीली कीमतों से सरोकार रखेंगे।

4.3.1 समग्र माँग वक्र का अवकलन

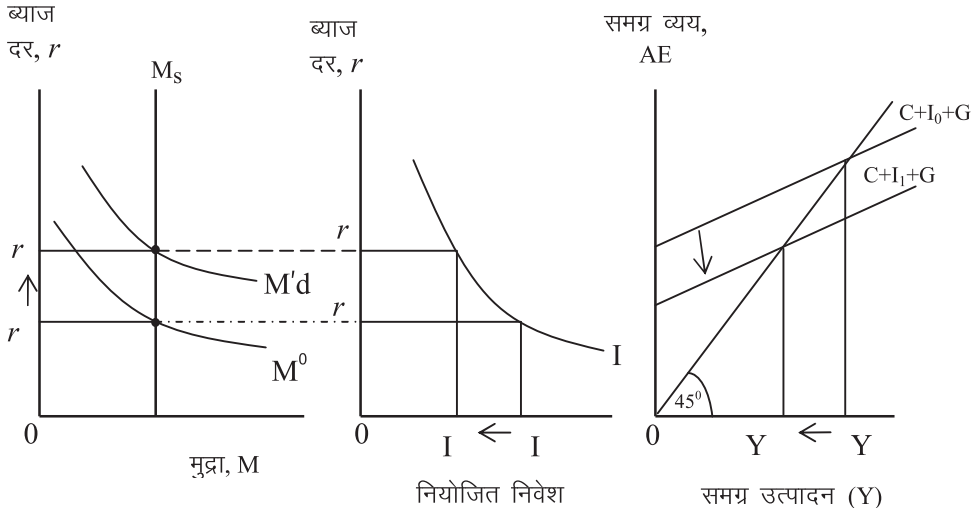
पाठ्यक्रम 'BECC 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत- I' की इकाई 5 में, हमने सरल केन्जिय मॉडल प्रस्तुत किया था। उस प्रतिमान में 45° रेखा और समग्र व्यय (C+I+G) के बीच प्रतिच्छेदन ने उत्पादन का संतुलन स्तर निर्धारित किया। हम यह मानकर चले कि कीमत स्तर स्थिर होता है। तदनुसार, समग्र व्यय का अर्थ हुआ वास्तविक व्यय।

मान लीजिए कि कीमत स्तर (P) में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा की माँग बढ़ जाती है। इसके फलस्वरूप, मुद्रा माँग वक्र दाएँ खिसक जाता है और यह विद्यमान ब्याज दर पर मुद्रा के माँगाधिक्य की ओर अग्रसर करता है।

समग्र माँग वक्र अवकलित करने के लिए, हमें वापस मुद्रा माँग वक्र की ओर लौटना होगा। (देखें BECC 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत- I की इकाई 9)। हमारी जानकारी के अनुसार, यदि उत्पादन Y बढ़ता है तो मुद्रा माँग वक्र दाएँ खिसक जाता है। उपर्युक्त का एक अर्थ यह भी है कि ब्याज दर (r) में वृद्धि हुई जबकि Y , में ह्रास होने पर विपरीत प्रक्रिया देखी जाती है (देखें 4.1)। इस प्रकार, हम देखते हैं कि मुद्रा माँग Y पर निर्भर करती है। याद रखें कि मुद्रा माँग मॉडल में, मुद्रा की माँग मौद्रिक आय (PY) और ब्याज दर (r) पर निर्भर करती है। चूँकि हम P को स्थिर मानकर चले थे, वास्तविक आय (Y) में कोई भी वृद्धि मौद्रिकआय (PY) में वृद्धि कारक ही रही। जैसा कि आप जानते ही हैं, मौद्रिकआय इन दो तरीकों में से किसी एक से बढ़ सकती है : वास्तविक आय (PY) में वृद्धि और कीमत स्तर (Y) में वृद्धि। जैसा कि ऊपर बताया गया, मौद्रिकआय में कोई भी वृद्धि मुद्रा माँग वक्र को दाएँ खिसका देती है, जो कि ब्याज दर में वृद्धि की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि Y स्थिर होने पर, P में कोई भी वृद्धि मुद्रा माँग वक्र को दाएँ खिसका देती है।

स्मरण करें कि किसी भी अर्थव्यवस्था के राजकोषीय नीति चर राजकीय व्यय और कर दर होते हैं। इसी प्रकार, मुद्रा आपूर्ति एक मौद्रिक नीति चर है। मुद्रा माँग विश्लेषण में, हम यह मानकर चले थे कि राजकोषीय और मौद्रिक नीति चर, यथा, राजकीय व्यय (G), कर (T) और मुद्रा आपूर्ति (M_s) स्थिर होते हैं। इसका अर्थ है कि सरकार कीमत स्तर परिवर्तित होने पर अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाती।

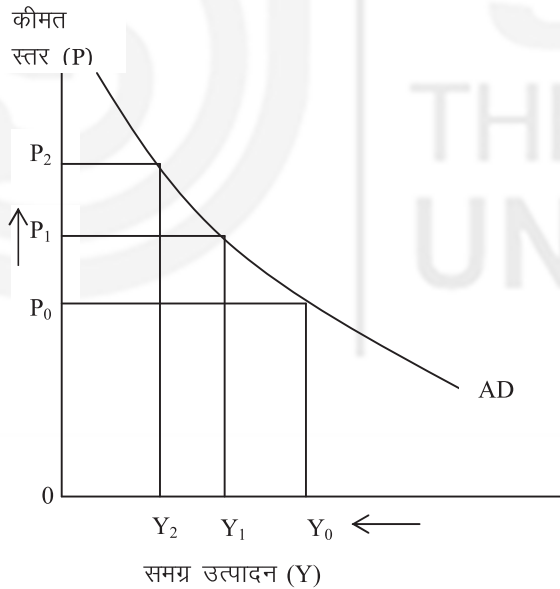
चलिए, यह जानते हैं कि कीमत स्तर परिवर्तित होने पर क्या होता है। मान लीजिए कि कीमत स्तर (P), में वृद्धि हुई है, जिसकी वजह से मौद्रिकआय में भी वृद्धि होगी। फलतः, मुद्रा की माँग बढ़ चुकी है। मुद्रा माँग वक्र बिंदु M_d^0 से दाएँ खिसककर M_d^1 पर आ जाता है। यह खिसकाव विद्यमान ब्याज दर r_0 पर मुद्रा के माँगाधिक्य की ओर ले जाता है। हम यह मानकर चलते हैं कि मुद्रा आपूर्ति (M_s) स्थिर है जिससे मुद्रा बाजार में नयी साम्यावस्था ब्याज की एक उच्चतर दर (r_1) पर पुनर्स्थापित होगी।



चित्र 4.1: समग्र माँग वक्र का अवकलन

चर r में वृद्धि बिंदु I_0 से I_1 तक नियोजित निवेश में ह्रास की ओर ले जाएगी। परिणामतः, समग्र माँग $(C+I_0+G)$ से घटकर $(C+I_1+G)$ रह जाएगी। फलतः, साम्य उत्पादन बिंदु Y_0 से घटकर Y_1 पर आ जाएगा (देखें चित्र 4.1)।

इसके विपरीत, मान लीजिए कि चर P में गिरावट देखी जा रही है। इसके परिणाम निम्नवत् होंगे : मुद्रा माँग वक्र बाएँ खिसक जाएगा; चर r में ह्रास होगा; नियोजित निवेश में वृद्धि होगी; इससे Y को एक उच्चतर साम्यावस्था मान प्राप्त होगा। तदनुसार, P और AD के बीच एक नकारात्मक संबंध दृष्टिगत होगा।



चित्र 4.2: समग्र माँग वक्र

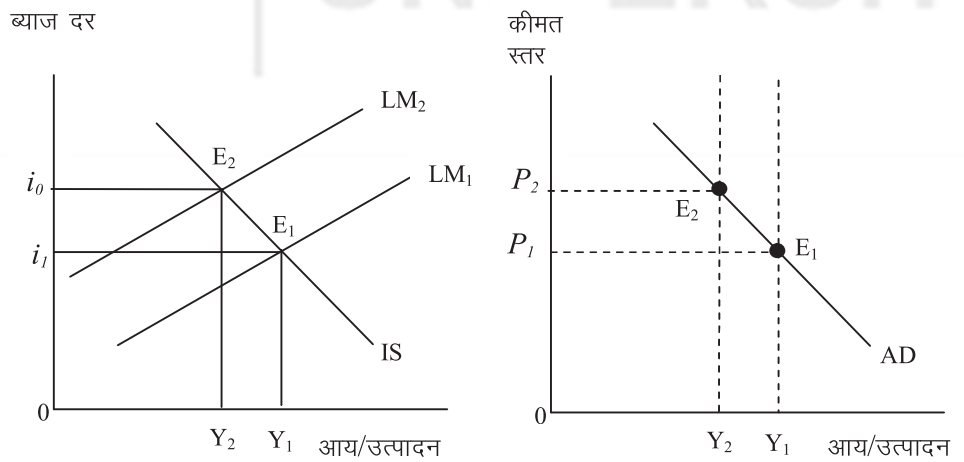
हम यह सिद्ध कर चुके हैं कि कीमत और समग्र उत्पादन (आय) Y के बीच एक नकारात्मक संबंध होता है। इस संबंध को **समग्र माँग (AD) वक्र** की संज्ञा दी जाती है (देखें चित्र 4.2)।

सकल घरेलू उत्पाद और अत्यावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

यह अवश्य स्मरण रहे कि हम नीति चरों G , T , और M_s को स्थिर मानकर चले हैं। नीति चरों के विशिष्ट मानों के साथ-साथ P का भी कोई विशिष्ट मान ज्ञात होने पर, हम Y और r के साम्यावस्था मान निर्धारित कर सकते हैं।

ये मान कीमत के ज्ञात मान और नीति चरों के मानों के लिए वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार में साम्यावस्था के अनुरूप होते हैं। अब हम P में परिवर्तन करते हैं लेकिन अन्य नीति चरों को अपरिवर्तित ही छोड़ देते हैं। इससे हमें Y और r के नये साम्यावस्था मान प्राप्त होते हैं। तदनुसार, हमें P के प्रत्येक मान के लिए Y का कोई साम्यावस्था मान प्राप्त होता है। चित्र में AD वक्र इन मानों का एक आलेख मात्र है। ध्यान देने की बात है कि AD वक्र पर प्रत्येक बिंदु वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार में साम्यावस्था के अनुरूप होता है।

हम समग्र माँग वक्र को $IS-LM$ साम्यावस्था से अंकित कर सकते हैं। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था में कीमत स्तर P_1 है, जैसा कि चित्र 4.3 में दर्शाया गया है। वास्तविक मुद्रा आपूर्ति जो कि LM_1 वक्र की स्थिति निर्धारित करती है, \bar{M}/\bar{P}_1 से दर्शायी गयी है। यहाँ IS और LM_1 का प्रतिच्छेदन कीमत P_1 के अनुरूप समग्र माँग का स्तर दर्शाता है और इस कारण इसे निचले खंड (E_1) में अंकित किया जाता है। मान लीजिए कि कीमत स्तर P_2 तक बढ़ता है। वक्र LM_2 दर्शाता है कि LM वक्र वास्तविक मुद्रा आपूर्ति \bar{M}/\bar{P}_2 पर आधारित है। साथ ही, LM_2 वक्र LM_1 वक्र के बाएँ स्थित है क्योंकि $\bar{M}/\bar{P}_2 < \bar{M}/\bar{P}_1$ (याद रखें कि मुद्रा आपूर्ति \bar{M} पर अपरिवर्तित रहती है)। नयी साम्यावस्था बिंदु E_2 पर दिखाई देती है। इस साम्यावस्था के पीछे परिवर्तनशील समंजन प्रक्रिया दिखाई देगी जहाँ मुद्रा माँगाधिक्य ब्याज दर को i_1 से बढ़ाकर i_2 पर ले आता है। बिंदु E_2 निचले खंड (E_2) में समग्र माँग वक्र पर संगत बिंदु दर्शाता है। यदि हम इसे कीमतों के विभिन्न स्तरों के लिए दोहराते हैं तो कीमत और उत्पादन के बीच प्रतिच्छेदन दर्शाते अनेक बिंदु प्राप्त होते हैं। यदि हम इन बिंदुओं को परस्पर जोड़ दें तो हमें समग्र माँग (AD) वक्र प्राप्त होगा। अतः, समग्र माँग वक्र ऋणात्मक ढलान अधोमुखी अवनत होकर यह दर्शाता है कि यदि समग्र कीमत स्तर बढ़ता है तो अर्थव्यवस्था में समग्र उत्पादन घट जाता है और इसका विपरीत भी सत्य है। यह भी ध्यान देने की बात है कि समग्र माँग वक्र पर सभी बिंदु वस्तु बाजार के साथ-साथ मुद्रा बाजार में भी साम्यावस्था इंगित करते हैं (क्योंकि ये बिंदु IS और LM वक्रों के प्रतिच्छेदन से अवकलित हैं)। इसका अर्थ यह है कि यदि कोई बिंदु AD वक्र से दूर अवस्थित हो तो उक्त दोनों ही बाजारों में सहकालिक साम्यावस्था नहीं दिखाई देगी।



चित्र 4.3: समग्र माँग वक्र का अवकलन

4.3.2 समग्र माँग वक्र का ढाल

हमें अभी-अभी ज्ञात हुआ कि Y और P के बीच एक नकारात्मक संबंध है तथा समग्र माँग (AD) वक्र ऋणात्मक ढलान का है। मुद्रा आपूर्ति के किसी भी ज्ञात स्तर (\bar{M}) के लिए, उच्चतर मूल्यों का अर्थ होगा – निम्नतर वास्तविक मुद्रा आपूर्ति (\bar{M}/P)। सरल शब्दों में, ऊँची कीमतों का अर्थ होगा कि उपलब्ध रूपों की संख्या का मान गिरा है। परिणामतः, किसी ऊँचे कीमत स्तर का अर्थ होगा – समग्र माँग का निम्न स्तर। इसी प्रकार, किसी नीचे कीमत स्तर का अर्थ होगा – समग्र माँग का उच्च स्तर। तदनुसार, समग्र माँग वक्र ऋणात्मक ढलान का होगा। दूसरे शब्दों में, वे कारक जो IS एवं LM वक्रों के ढाल के लिए उत्तरदायी होते हैं, समग्र माँग वक्र के ढाल के लिए भी जिम्मेदार होते हैं।

आगे यह समझने के लिए कि समग्र माँग वक्र ऋणात्मक ढलान का क्यों होता है, हमें यह स्मरण करना होगा कि अर्थव्यवस्था का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) उसके उपभोग, निवेश, राजकीय व्यय एवं निवल निर्यात का कुल योग होता है। इन चार घटकों में से प्रत्येक वस्तु व सेवाओं की समग्र माँग में योगदान करता है। यदि हम यह मानकर चलें कि सरकारी खर्च नीति-निर्धारित होता है तो व्यय के अन्य तीन घटक – यथा उपभोग, निवेश एवं निवल निर्यात – आर्थिक दशाओं और विशेषकर, कीमत स्तर पर निर्भर करेंगे। अतः, हमें यह विचार कर लेना चाहिए कि कीमत स्तर उपभोग, निवेश और निवल निर्यात हेतु वांछित वस्तु व सेवाओं की मात्रा को किस प्रकार प्रभावित करता है।

1. **कीमत स्तर और उपभोग** : उपभोग पर कीमत स्तर का प्रभाव 'धन-संपत्ति प्रभाव' भी कहलाता है। हम सभी कुछ नकद राशि अपने पास सदा रखते हैं। कीमत स्तर में कोई भी गिरावट मुद्रा का वास्तविक मान बढ़ा देती है और हमें संपन्नतर बना देती है, जो कि आगे हमें और अधिक खर्च करने को प्रोत्साहित करता है। उपभोक्ता व्यय में किसी भी वृद्धि का अर्थ होगा – वांछित वस्तुओं और सेवाओं की ज्यादा मात्रा। इसके विपरीत, कीमत स्तर में कोई भी वृद्धि मुद्रा का वास्तविक मान घटा देती है, जो कि आगे धन-संपत्ति, उपभोक्ता व्यय और वांछित वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा में कमी ला देती है।

2. **कीमत स्तर और निवेश** : इसे 'ब्याज दर प्रभाव' भी कहा जाता है। कोई भी निम्न कीमत स्तर ब्याज दर घटा देता है, निवेश हित में ज्यादा व्यय को प्रोत्साहित करता है और इस प्रकार वांछित वस्तु एवं सेवाओं की मात्रा बढ़ा देता है। इसके विपरीत, कोई भी उच्च कीमत स्तर निवेश व्यय और वांछित वस्तु एवं सेवाओं की मात्रा घटाकर ब्याज दर बढ़ा देता है।

3. **कीमत स्तर और निवल निर्यात** : इसे 'विनिमय दर प्रभाव' अथवा 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रभाव' भी कहा जाता है। विनिमय दर घरेलू मुद्रा के लिहाज से विदेशी मुद्रा की कीमत को कहा जाता है। मान लीजिए कि भारत के कीमत स्तर में गिरावट है। इससे भारत का निवल निर्यात बढ़ेगा और इस वजह से शेष जगत द्वारा वांछित भारतीय वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा में वृद्धि होगी। तदनुसार, कीमतों में गिरावट के फलस्वरूप उच्चतर समग्र माँग बढ़ेगी। इसके विपरीत, जब भारत का कीमत स्तर बढ़ता है तो विदेशी माल अपेक्षाकृत सस्ता हो जाता है। शेष जगत द्वारा वांछित भारतीय वस्तु व सेवाओं की मात्रा घटेगी, जिसके फलस्वरूप समग्र माँग कम हो जाएगी। इससे हम एक ऐसे बिंदु पर पहुँचेंगे जहाँ कीमत स्तर और समग्र माँग (AD) विलोमतः संबद्ध होते हैं।

4.4 समग्र माँग वक्र में विचलन

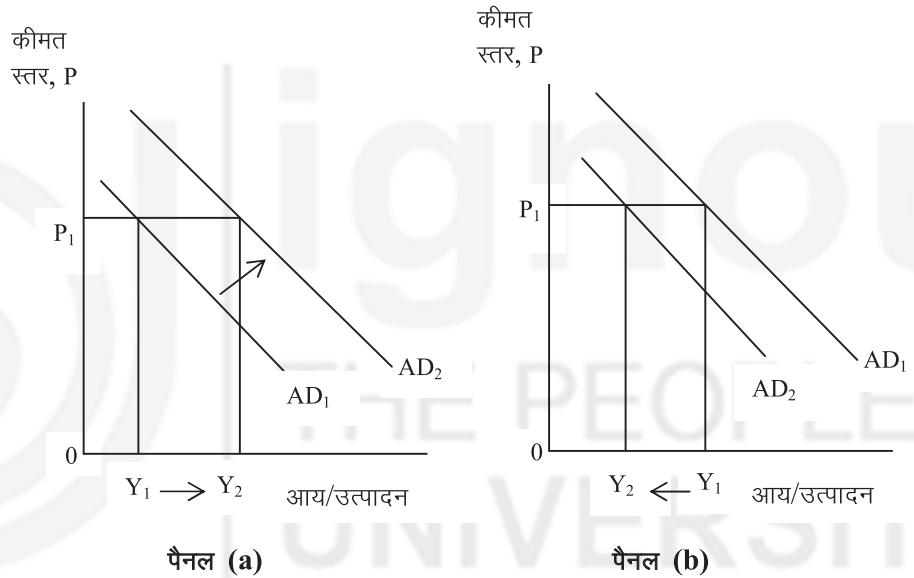
यह याद रखना जरूरी है कि समग्र माँग वक्र कीमत तस्तर को छोड़कर अन्य कारकों को बराबर रखकर खींचा जाता है। तदनुसार, कीमत स्तर में कोई भी परिवर्तन AD वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक संचलन की ओर अग्रसर करता है। दूसरी ओर, यदि किसी

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

ऐसे अन्य कारक में कोई परिवर्तन होता है जिसे कि **AD** वक्र अवकलित करते समय हमने स्थिर माना था, तो वक्र में कुछ खिसकाव देखा जा सकता है।

मुद्रा आपूर्ति को स्थिर मानकर चलते समय, ऋणात्मक ढलान समग्र माँग वक्र की तीन प्रकार से व्याख्या की थी। अतः, मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन **AD** वक्र को खिसका सकता है। इसी प्रकार, उप-खंड 4.3.1 में समग्र माँग वक्र खींचते समय, हम यह मानकर चले थे कि राजकीय व्यय एवं कर भी स्थिर हैं। अतएव, समग्र माँग वक्र में खिसकाव राजकीय व्यय एवं करों में किसी परिवर्तन की वजह से होगा। अनिवार्यतः, इसका अर्थ है कि कोई भी ऐसा कारक जिसे समग्र माँग वक्र खींचते समय स्थिर रखा गया हो, समग्र माँग वक्र में खिसकाव की वजह बन सकता है। हम यहाँ **AD** वक्र पर कुछ विशिष्ट कारकों में परिवर्तनों के प्रभाव का वर्णन करेंगे। ये कारक हैं – (i) निवेश, (ii) उपभोग, (iii) राजकीय व्यय, (iv) कराधान, (v) निवल निर्यात, तथा (vi) मुद्रा आपूर्ति।

चित्र 4.4 में, हमने **AD** में दो प्रकार के खिसकाव दर्शाए हैं। पैनल (a) में, हम एक ऐसी स्थिति का वर्णन करते हैं जहाँ समग्र माँग वक्र दाएँ खिसकता है, यथा AD_1 से AD_2 तक। यहाँ, चर **P** के प्रत्येक स्तर पर, साम्य उत्पादन (**Y**) अपेक्षाकृत अधिक है। पैनल (b) में, दूसरी ओर, **AD** वक्र बाएँ खिसकता है, यथा AD_1 से AD_2 तक। इस स्थिति में, प्रत्येक कीमत स्तर पर **Y** में ह्रास देखा जाता है।



चित्र 4.4: समग्र माँग वक्र में खिसकाव

आइए, चित्र 4.4 देखें और ऐसे कुछ उदाहरणों पर चर्चा करें जो समग्र माँग वक्र में खिसकाव ला देते हैं।

- निवेश** : यदि फर्म अपने भविष्य के प्रति आशावान हों तो वे अपना निवेश बढ़ाने की योजना बना सकती हैं। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर में प्रौद्योगिकीय प्रगति, समग्र माँग में वृद्धि की ओर ले जाएगी, जिससे **AD** वक्र दाएँ खिसक जाएगा। इसके विपरीत, यदि फर्म भावी व्यापार दशाओं के प्रति निराशावान हों तो वे आगे निवेश रोक सकती हैं। इससे **AD** वक्र बाएँ खिसक जाएगा।
- उपभोग** : चलिए, मान लेते हैं कि आर्थिक परिवेश में कुछ परिवर्तन ऐसे होते हैं कि परिवार आय के प्रत्येक स्तर पर पहले से अधिक राशि बचाने लगे हैं।

यह स्थिति सरकार द्वारा प्रदत्त किन्हीं प्रोत्साहनों अथवा बचत पर ब्याज दर में वृद्धि की वजह से हो सकता है। बचत में किसी भी वृद्धि से उपभोग में गिरावट का प्रभाव देखा जाएगा। उपभोग में इस गिरावट की वजह से AD वक्र को बाएँ खिसकता देखा जाएगा (ठीक चित्र 4.2 के पैनल (b) की भाँति)। चलिए, एक और परिदृश्य पर विचार करते हैं।

मान लीजिए कि शेयर बाजार उत्कर्ष पर है, जो कि परिवारों के लिए अप्रत्याशित लाभ लेकर आया है। इससे उपभोग की संभावना बढ़ेगी और फलतः AD वक्र दाएँ खिसक जाएगा (ठीक चित्र 4.2 के पैनल (a) की भाँति)।

- iii) **राजकीय व्यय** : सरकारी खरीद में परिवर्तन के कारण। यदि हम नियत सरकारी खरीद संबंधी अपनी अवधारणा को छोड़कर उसे लोचदार मान लें तो यह उन नीति-निर्माताओं द्वारा सर्वाधिक प्रयुक्त प्रत्यक्ष विधि कहलाएगी जो समग्र माँग वक्र को खिसका देते हैं। यदि सरकारी खरीद में वृद्धि होती है तो AD वक्र दाएँ खिसक जाता है, और इसका विपरीत भी सत्य है।
- iv) **कर** : एक अन्य कारक जो AD वक्र में खिसकाव लाता है, कराधान स्तर में बदलाव है। यदि कर दरों में वृद्धि होती है तो प्रयोज्य आय का स्तर घट जाता है। परिवारों की प्रयोज्य आय में कोई भी कमी कुल उपभोग में गिरावट की ओर ले जाती है। दूसरी ओर, यदि कर दर में कोई कमी आती है तो परिवारों के उपभोग स्तर में वृद्धि देखी जाती है। कुछ कर विशेष निवेश को प्रभावित करने वाले होते हैं। यदि निवेश कर समंजन बढ़ता है (यह किसी फर्म के निवेश व्यय से जुड़ा कर छूट होता है) तो यह निवेश बढ़ा देता है और इस कारण AD वक्र दाएँ खिसक जाता है।
- v) **निवल निर्यात** : निवल निर्यात को निर्यात घटा आयात ($X - M$) के रूप में परिभाषित किया जाता है। यदि आयात स्थिर रहने के दौरान निर्यात (X) में वृद्धि होती है तो निवल निर्यात (NX) में वृद्धि ही होगी। इसी प्रकार, यदि निर्यात अपरिवर्तित रहने के दौरान आयात में कोई गिरावट आती है तो NX में वृद्धि देखी जाएगी। आइए, एक उदाहरण के माध्यम से AD वक्र पर NX का प्रभाव देखें। जब, उदाहरण के लिए, यूरोप में मंदी का दौर आता है तो वह अमेरिका से अपेक्षाकृत कम माल खरीदता है। इस कारण प्रत्येक कीमत स्तर पर अमेरिकी निवल निर्यात घट जाता है। इससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था दर्शाने वाला AD वक्र बाएँ खिसक जाता है (ठीक चित्र 4.2 के पैनल (b) की भाँति)। तदनुसार, हम देखते हैं कि NX में गिरावट AD वक्र को बाएँ खिसका देती है। इसी प्रकार, NX में कोई भी वृद्धि AD वक्र को दाएँ खिसका देती है।
- vi) **मुद्रा आपूर्ति** : मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि ब्याज दर में गिरावट की ओर ले जाएगी। इससे अर्थव्यवस्था में निवेश व्यय की संभावना बनेगी और अंततः उत्पादन स्तर बढ़ेगा। अब AD वक्र दाएँ खिसक जाएगा। इसी प्रकार, मुद्रा आपूर्ति में कोई भी गिरावट ब्याज दर में वृद्धि की ओर ले जाएगी। इससे निवेश में कमी देखने में आएगी, जो कि आगे समग्र माँग घटा देगी। तदनुसार, मुद्रा आपूर्ति में कमी आते ही AD वक्र बाएँ खिसक जाएगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उपर्युक्त सभी उदाहरणों में कीमत स्तर स्थिर रखा जाता है। ऊपर की गई अपनी चर्चा में हमने ऐसे अधिकांश कारकों को शामिल किया जो IS

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

और LM वक्रों को प्रभावित करते हैं। यहाँ LM वक्र को कीमत स्तर भी प्रभावित करता है। परंतु इससे AD वक्र में कोई खिसकाव नहीं आएगा; बल्कि P में कोई भी परिवर्तन AD वक्र के एक छोर दूसरे छोर तक संचलन की ओर ले जाएगा।

बोध प्रश्न 1

1) वक्रों IS-LM के विश्लेषण की मदद से समग्र माँग वक्र अवकलित करें।

.....

2) समग्र माँग वक्र ऋणात्मक ढलान क्यों होता है?

.....

3) किसी AD वक्र के दाहिने खिसकाव का समर्थन करते कोई दो कारण दीजिए।

.....

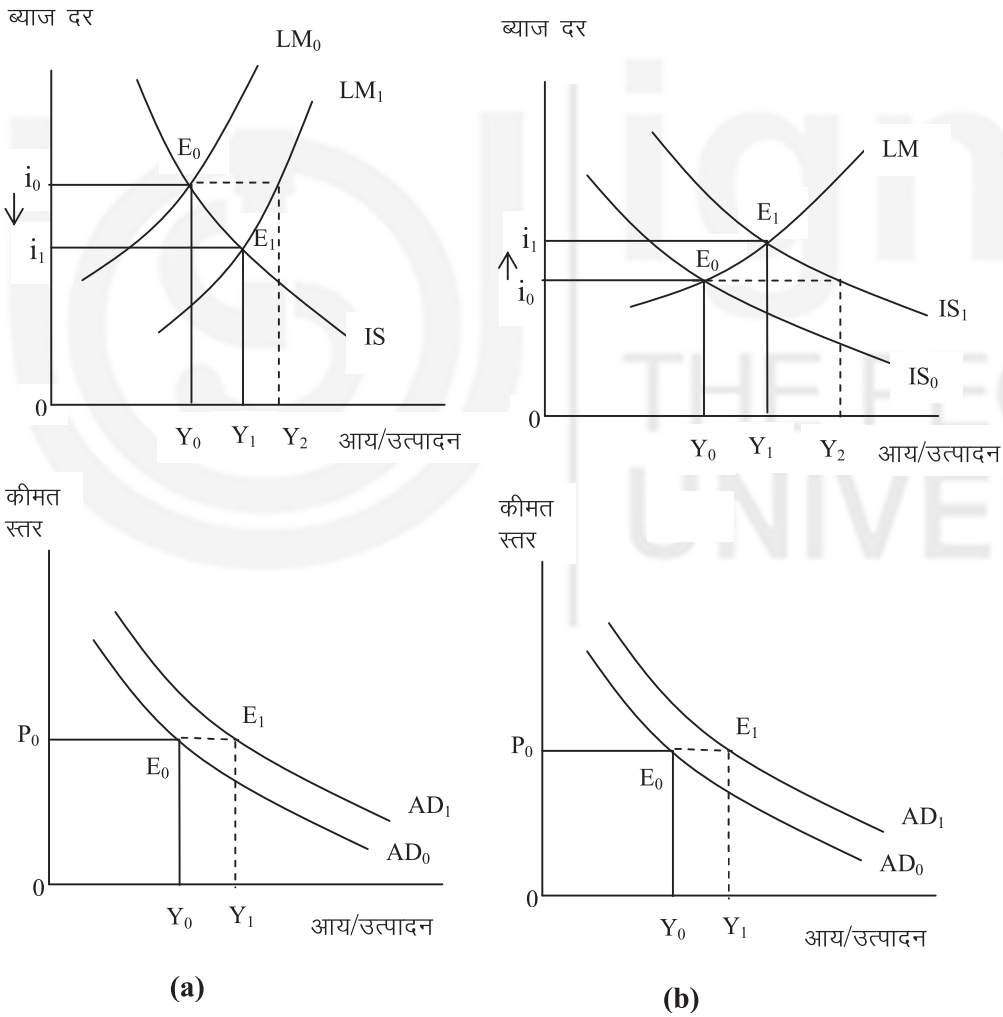
4.5 समग्र माँग वक्र से गुणक विश्लेषण

आम तौर पर, स्वायत्त समग्र व्यय में परिवर्तन समग्र माँग वक्र को खिसका देता है। इस खिसकाव का परिमाण सदैव स्वायत्त समग्र व्यय में परिवर्तन गुणा गुणक के बराबर होता है (देखें BECC 133 की इकाई 5)। यह गुणक प्रभाव इस अवधारणा की ओर संकेत करता है कि खर्च में कोई भी बढ़ोतरी राष्ट्रीय आय में कहीं अधिक वृद्धि की ओर ले जा सकती है।

स्वायत्त समग्र व्यय में कोई भी वृद्धि AD वक्र को दाएँ खिसका देती है। दूसरी ओर, स्वायत्त समग्र व्यय में कोई भी कमी AD वक्र को बाएँ खिसका देती है। यदि हम एक स्थिर कीमत स्तर और स्थिर ब्याज दर की कल्पना करके चलें तो गुणक α_G होगा। यदि हम लोचदार कीमत स्तर व ब्याज दरों (जैसा कि IS-LM विश्लेषण के उदाहरण में था) पर विचार करें तो हमें दो गुणक प्राप्त होते हैं :

(i) राजकोषीय नीति गुणक, तथा (ii) मौद्रिक नीति गुणक। यहाँ राजकोषीय नीति गुणक मुद्रा आपूर्ति स्थिर रखे जाने पर, संतुलन आय पर राजकीय व्यय में परिवर्तनों का प्रभाव दर्शाता है। इसे वास्तविक मुद्रा आपूर्ति स्थिर रखते हुए, राजकीय व्यय में परिवर्तन के कारण राष्ट्रीय आय में होने वाले परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है। मौद्रिक नीति गुणक को, दूसरी ओर, राजकीय व्यय एवं कर दर को स्थिर रखते हुए, वास्तविक मुद्रा आपूर्ति में किसी ज्ञात परिवर्तन हेतु राष्ट्रीय आय में परिवर्तन के परिमाण के रूप में परिभाषित किया जाता है।

आइए, उपर्युक्त दोनों अवधारणाओं को आरेखों के माध्यम से स्पष्ट करें। चित्र 4.5 के खंड (a) में हमने मौद्रिक नीति गुणक स्पष्ट किया है। मान लीजिए कि कीमत स्तर स्थिर है। यहाँ संतुलन अवस्था E_0 से दर्शाई गई है, जहाँ वक्र IS और LM_0 प्रतिच्छेद करते हैं। संतुलन उत्पादन और ब्याज दर क्रमशः Y_0 और i_0 से दर्शाए गए हैं। चलिए, मान लेते हैं कि मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि हुई है जिससे LM वक्र LM_0 से दाएँ खिसककर LM_1 पर आ गया है। यहाँ नया संतुलन बिंदु E_1 है। यदि हम केवल मुद्रा बाजार पर विचार करें तो संतुलन उत्पादन में वृद्धि बिंदु Y_0 से Y_2 तक दिखाई देगी। तथापि, वास्तविक क्षेत्र की विद्यमानता के कारण, संतुलन उत्पादन परिवर्तन बिंदु Y_0 से Y_1 तक दिखाई देगा। साथ ही, LM वक्र में यह संपूर्ण खिसकाव राष्ट्रीय आय में किसी बदलाव के रूप में दृष्टिगत नहीं होता।



चित्र 4.5: गुणक विश्लेषण और समग्र माँग वक्र

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

चित्र 4.5 के पैनल (b) में, हम यह मानकर चलते हैं कि राजकीय व्यय में वृद्धि हुई है (IS वक्र दाएँ खिसक गया है)। अब संतुलन बिंदु E_0 से बदलकर E_1 हो गया है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि IS वक्र का संपूर्ण खिसकाव राष्ट्रीय आय में बदलाव, यथा Y_2 , के रूप में नहीं दिखाई दे रहा। आप यह भी देखेंगे कि समग्र माँग वक्र इस भाँति खिसका है कि नयी संतुलन आय Y_1 स्तर पर है, न कि Y_2 स्तर पर। ऐसा गुणक प्रभाव के कारण है। स्तर Y_2 पर, या तो मुद्रा बाजार में साम्यावस्था पैनल (a) के रूप में दिखाई देगी अथवा वस्तु बाजार में साम्यावस्था पैनल (b) के रूप में। अतः, समग्र अर्थव्यवस्था साम्यावस्था में नहीं दिखाई देगी और एक बाजार में परिवर्तन का प्रभाव दूसरे बाजार पर देखा जाएगा।

यहाँ AD वक्र स्वायत्त व्यय में परिवर्तन के परिमाण से नहीं बल्कि स्वायत्त समग्र व्यय गुणा गुणक में परिवर्तन के परिमाण से खिसकता है, जहाँ ये गुणक ही राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति गुणक होते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) राजकोषीय नीति और मौद्रिक नीति गुणकों को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

2) जब कभी LM वक्र खिसकता है तो क्या समग्र माँग में कोई परिवर्तन आता है? सकारण समझाएँ।

.....

.....

.....

3) क्या आय का संतुलन स्तर उतने ही परिमाण में बढ़ता है जितना कि IS अथवा LM वक्र खिसकता है? ऐसा क्यों अथवा क्यों नहीं?

.....

.....

.....

4.6 सार—संक्षेप

पिछले खंड में IS-LM विश्लेषण के विषय में जानने के बाद, इस इकाई का आरंभ हमने समग्र माँग पर कीमत स्तर में परिवर्तनों के प्रभाव पर दृष्टि डालने के उद्देश्य से किया। हमने IS-LM विश्लेषण की मदद से AD वक्र अवकलित किया। समग्र माँग वक्र की ऋणात्मक ढलान हेतु उत्तरदायी कारकों पर विस्तृत चर्चा की गई।

हमने समग्र माँग वक्र में खिसकावों पर भी चर्चा की। समग्र माँग वक्र से गुणक विश्लेषण को राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति गुणकों की मदद से स्पष्ट किया गया।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

- 1) इन IS और LM वक्रों का प्रतिच्छेदन किसी ज्ञात कीमत के अनुरूप समग्र माँग का स्तर दर्शाता है। मान लीजिए कि कीमत स्तर बढ़ता है। यहाँ LM वक्र बाएँ खिसकेगा। अब एक नयी साम्यावस्था नजर आएगी। ये साम्यावस्था बिंदु एक भिन्न खंड में AD वक्र प्रदान करते हैं जहाँ कीमत y -अक्ष पर और उत्पादन x -अक्ष पर दर्शाया जाता है।
- 2) हमने ये तीन कारण उप-खंड 4.3.1 में दिए हैं। वही देखें।
- 3) हमने ऐसे छह कारणों पर चर्चा की है जो AD वक्र में किसी खिसकाव का कारण बन सकते हैं। आप किन्हीं दो पर विस्तृत चर्चा कर सकते हैं। उक्त AD वक्र में खिसकाव दर्शाने के लिए आप एक आरेख भी खींच सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

- 1) खंड 4.5 देखें और उत्तर दें।
- 2) कोई जरूरी नहीं। यहाँ LM व IS इस भाँति खिसक सकते हैं कि संतुलन उत्पादन कोई परिवर्तन न हो। इस प्रकार की स्थिति में AD वक्र नहीं खिसका करता।
- 3) उत्पादन का संतुलन स्तर उस परिमाण में नहीं बदलता जितना कि IS अथवा LM वक्र में खिसकाव आता है। यह उसके मुकाबले कुछ धीमे बदलता है। खंड 4.5 देखें।



इकाई 5 समग्र आपूर्ति*

इकाई की रूपरेखा

- 5.0 उद्देश्य
- 5.1 विषय—प्रवेश
- 5.2 समष्टि अर्थशास्त्र में समग्र आपूर्ति
- 5.3 परंपरागत एवं केन्जिय समग्र आपूर्ति वक्र
- 5.4 अल्पावधि में समग्र आपूर्ति वक्र
- 5.5 दीर्घावधि में समग्र आपूर्ति वक्र
- 5.6 मध्यावधि में समग्र आपूर्ति वक्र
 - 5.6.1 मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र का ढलान
 - 5.6.2 मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव
- 5.7 सार—संक्षेप
- 5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

5.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई पढ़ लेने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि :

- व्यक्ति अर्थशास्त्र व समष्टि अर्थशास्त्र में प्रयुक्त समग्र आपूर्ति (AS) वक्रों से जुड़ी संकल्पनाओं में अन्तर स्पष्ट कर सकें;
- कीमत—उत्पादन प्रतिक्रिया वक्र समझा सकें;
- AS वक्र पर परंपरागत एवं केन्जिय विचारों के बीच अंतर्निहित अंतर स्पष्ट कर सकें;
- केन्जिय AS वक्र की ढलान एवं स्थिति के पीछे कारण पहचान सकें; तथा
- अल्पावधि, मध्यावधि एवं दीर्घावधि में प्रयुक्त AS वक्रों के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें।

5.1 विषय—प्रवेश

पिछली इकाई में हमने समग्र माँग (AD) वक्र के ढलान एवं खिसकावों के विषय में चर्चा की। आइए, अब बाजार के दूसरे पहलू पर नजर डालें, यथा समग्र आपूर्ति (AS)। किसी फर्म के आपूर्ति वक्र का स्मरण करें — यह विभिन्न कीमतों पर किसी फर्म द्वारा आपूर्तित अथवा उत्पादित मात्रा दर्शाता है। किसी फर्म द्वारा आपूर्तित मात्रा आगत एवं उत्पादन कीमतों से अलग बाजार प्राधार पर निर्भर करती है। जहाँ कुछ फर्म किसी पूर्णतः प्रतियोगी बाजार में काम करती हैं, कुछ अन्य अपनी प्रकृति में एकाधिकारवादी होती हैं।

उक्त AS वक्र वस्तु व सेवाओं की उस समूची मात्रा को दर्शाता है जो कोई अर्थव्यवस्था विभिन्न कीमत स्तरों पर प्रस्तुत करेगी। इस AS वक्र पर कुछ और चर्चा की आवश्यकता

* प्रो. कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं डॉ. निधि तेवतिया, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

है क्योंकि किसी अर्थव्यवस्था हेतु आपूर्ति वक्र अवकलित करते समय अनेक मद्दे उठ खड़े होते हैं।

इस AS वक्र के प्रकरण में समय क्षितिज एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक होता है क्योंकि अल्पावधि और दीर्घावधि में अर्थव्यवस्था भिन्न-भिन्न तरीके से व्यवहार करती है। अतः, अल्पावधि और दीर्घावधि में AS वक्र की आकृति एक सी नहीं होती। इस AS वक्र की आकृति में भिन्नता के पीछे एक कारण उत्पादन एवं कीमत विषयक परंपरागत एवं केन्जिय विचारों में भिन्नताएँ भी है।

5.2 किसी अर्थव्यवस्था की समग्र आपूर्ति

किसी अर्थव्यवस्था में सभी फर्मों के आपूर्ति वक्रों को एक साथ जोड़कर समग्र आपूर्ति वक्र अवकलित किया जाना तार्किक लग सकता है। तथापि, अर्थव्यवस्था में समग्र कीमत स्तर तथा समग्र उत्पादन (आय) के स्तर के बीच संबंध के पीछे तर्क – यथा AS वक्र – किसी फर्म विशेष के आपूर्ति वक्र के पीछे तर्क से बहुत भिन्न होता है। यह AS वक्र कोई बाजार आपूर्ति वक्र नहीं होता, और यह किसी अर्थव्यवस्था में सभी वैयक्तिक आपूर्ति वक्रों का साधारण योग भी नहीं होता (पिछली इकाई में समग्र माँग वक्र हेतु दी गई एक इसी प्रकार की सावधानी का स्मरण करें)। तदनुसार, इस AS वक्र की व्याख्या करते समय आपको सावधान रहना होगा। आइए, देखें किस प्रकार।

उक्त सावधानी हेतु कारण यह है कि अनेक फर्मों साधारणतः बाजार कीमतों पर प्रतिक्रिया नहीं दिखातीं। याद करें कि किसी भी पूर्णतः प्रतिस्पर्धेय बाजार में सक्रिय फर्मों कीमत-स्वीकारक होती हैं। एकाधिकारी फर्मों, दूसरी ओर, अपनी ही कीमतें लागू करती हैं। ऐसा देखा जाता है कि कुछ फर्मों अपनी सक्रियता वाले बाजार के अपूर्ण प्रतिस्पर्धेय होने पर उसका मानो नेतृत्व करने लगती हैं। ये फर्मों माँग व लागत संबंधी अपनी धारणाओं के आधार पर ही उत्पादन एवं कीमत दोनों का निर्धारण करने लगती हैं। केवल पूर्णतः प्रतिस्पर्धेय बाजारों में ही फर्मों बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित कीमतों पर प्रतिक्रिया दर्शाती हैं।

जब समग्र कीमत स्तर बदलता है तो आगत कीमत भी बदलते हैं और चूँकि अर्थव्यवस्था में अनेक फर्मों कीमतों के साथ-साथ उत्पादन भी तय करती हैं, यह स्पष्ट है कि 'आपूर्ति' शब्द के परंपरागत अर्थ में AS अर्थात् समग्र आपूर्ति वक्र अस्तित्व ही नहीं रखता। जो अस्तित्वपरक है उसे *कीमत-उत्पादन प्रतिक्रिया वक्र* कहा जाता है, यथा एक ऐसा वक्र जो किसी ज्ञात तथ्य-शृंखला के तहत अर्थव्यवस्था में सक्रिय सभी फर्मों के कीमत-निर्धारण एवं उत्पादन-निर्धारण प्रस्तुत करता है।

कीमत-निर्धारक फर्मों (जो कि केवल अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धेय प्राधार में मिलती हैं) वैयक्तिक आपूर्ति वक्र नहीं दर्शाती क्योंकि ये फर्मों उत्पादन एवं कीमत दोनों एक साथ चुनती हैं। किसी भी वैयक्तिक आपूर्ति वक्र को अवकलित करने के लिए हमें कल्पना करनी होती है कि किसी फर्म ने कोई कीमत बोली है और उसे बता दिया गया है कि वह उस कीमत पर कितने वस्तु की आपूर्ति करेगी। यदि फर्मों कीमतें तय भी कर रही हों तो हम ऐसा नहीं कर पाएँगे। यदि अपूर्ण रूप से प्रतिस्पर्धेय फर्मों के लिए आपूर्ति वक्र उपलब्ध न हों तो हम निश्चय ही समग्र आपूर्ति वक्र प्राप्त करने के लिए उनका समग्र योग ज्ञात नहीं कर पाएँगे।

5.3 परंपरागत एवं केन्जिय समग्र आपूर्ति वक्र

हमने उत्पादन निर्धारण पर परंपरागत एवं केन्जिय अवधारणाओं के विषय में चर्चा पाठ्यक्रम BECC 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I की इकाई 4 में की थी। परंपरागत अर्थशास्त्री यह मानकर चलते हैं कि सभी फर्मों में संसाधन पूर्णतः नियोजित हैं और इस कारण विनिर्माण इकाइयाँ अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्यरत हैं।

जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार स्तर पर काम कर रही हो तो और अधिक उत्पादन वृद्धि नहीं हो सकती। समग्र माँग में वृद्धि की स्थिति में, केवल कीमत स्तर ही बढ़ेगा जबकि उत्पादन स्तर वही रहेगा क्योंकि फर्म पहले ही अपनी पूरी क्षमता से काम कर रही हैं। अतः, समग्र माँग में वृद्धि उत्पादन स्तर में किसी वृद्धि की ओर नहीं ले जाती। इसके अलावा, यदि समग्र माँग में कोई गिरावट आती है तो कीमतों और वेतन दर में भी गिरावट देखी जाएगी। कीमतों में कमी वस्तु एवं सेवाओं की माँग बढ़ा देगी। इसी प्रकार, वेतन दर में गिरावट श्रमिकों की माँग बढ़ा देगी। अतएव, कीमतों और वेतन दर में गिरावट संसाधनों का पूर्ण नियोजन सुनिश्चित कर देगी। इससे संकेत मिलता है कि कीमत स्तर जो चाहे हो, वस्तु आपूर्ति उतनी ही मात्रा में होगी। उत्पादन का ऐसा स्तर उत्पादन का पूर्ण रोजगार स्तर अथवा 'संभावित जीडीपी' भी कहा जाता है। तदनुसार, हम कह सकते हैं कि परंपरागत समग्र आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वाकार होता है। इसे 'परंपरागत AS वक्र' की संज्ञा दी जाती है।

केन्जिय समग्र आपूर्ति वक्र के उद्गम का उत्तरदायी 'ग्रेट डिप्रेशन' अर्थात् महामंदी को माना जा सकता है क्योंकि उस दौर में अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन के मुकाबले बहुत कम रहा। ऐसे परिवेश में, कीन्स ने कहा कि निष्क्रिय पूँजी व श्रमबल को काम में लगाकर कीमतों में बिना किसी वृद्धि के उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। उनका तर्क था कि कीमतें लोचदार नहीं होतीं। कीमतों और वेतन दर में कुछ दृढ़ता अवश्य होती है, विशेषकर जब कोई नीचे की ओर परिवर्तन वांछित होता है। वर्तमान में, इस अवधारणा को 'अल्पावधि कीमत स्थिरता' की संज्ञा देकर हमने कुछ ज्यादा ही तूल दिया है। अल्पावधि में, फर्म माँग में बदलाव देखे जाने पर कीमतें बदलने से कतराती हैं। अपितु, अत्यल्प अवधि के लिए ही सही, वे उत्पादन में वृद्धि अथवा कमी कर देती हैं। परिणामतः, अल्पावधि में AS वक्र नितांत समतल दिखाई देता है। खास बात यह है कि अल्पावधि में कीमत स्तर जीडीपी के वर्तमान स्तरों से अप्रभावित रहता है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि अल्पावधि में, AS वक्र क्षैतिज होता है। इसे 'केन्जिय आपूर्ति वक्र' भी कहा जाता है।

अतः, यदि हम उत्पादन स्तर पर विचार करें तो कह सकेंगे कि परंपरागत दृष्टिकोण से, अर्थव्यवस्था सदैव सभी उपलब्ध संसाधनों के पूर्ण रोजगार स्तर पर काम करती है जबकि केन्जिय दृष्टिकोण से, अर्थव्यवस्था उस अतिरिक्त पूँजी को नजर में रखती है जो माँग बढ़ने की स्थिति में प्रयोग की जा सकती है ताकि अधिकाधिक उत्पादन कर एक समग्रतः उच्च उत्पादन स्तर हासिल किया जा सके। यदि हम कीमत स्तर पर नजर डालें, परंपरागत अवधारणा के तहत, कीमत परिवर्तन उत्पादन स्तर में बिना किसी बदलाव के होगा, परन्तु केन्जिय अवधारणा के अनुसार, कीमत परिवर्तन उत्पादन स्तर में परिवर्तन भी साथ ले आते हैं।

1) समष्टि अर्थशास्त्र में कीमत-उत्पादन प्रतिक्रिया वक्र की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समग्र आपूर्ति के विषय में परंपरागत और केन्जिय अवधारणाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) उत्पादन एवं कीमत स्तरों के विषय में परंपरागत अवधारणा के निहितार्थ स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

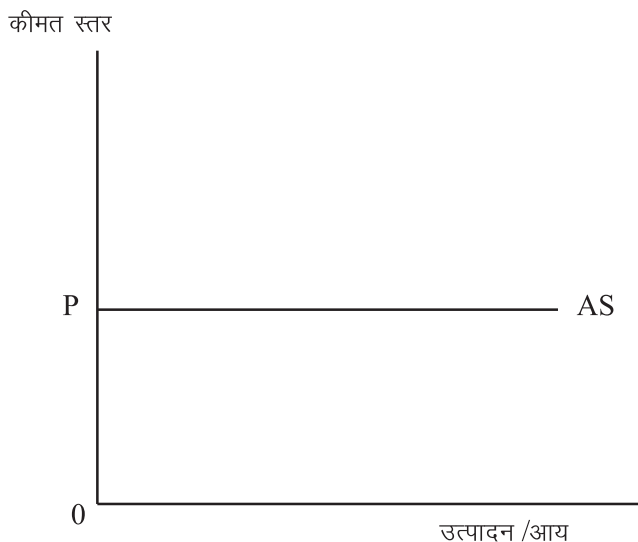
.....

.....

5.4 अल्पावधि में समग्र आपूर्ति

जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया, अल्पावधि AS वक्र (केन्जिय AS वक्र) अपनी क्षैतिज आकृति से यह दर्शाता है कि विद्यमान कीमत स्तर पर वस्तु की जो भी मात्रा माँगी जाएगी, फर्म उसकी आपूर्ति करेंगी। इस प्रकार के वक्र यह अवधारणा विहित करते हैं कि अल्पावधि में अर्थव्यवस्था के पास अतिरिक्त क्षमता (पूँजी अथवा श्रमबल) होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन के ऐसे कारक मौजूद हैं जिनकी आवश्यकता वर्तमान स्तर पर उत्पादन के लिए नहीं है। व्यापक बेरोजगारी के चलते, फर्मों को वर्तमान वेतन दर पर अपनी इच्छानुसार श्रमिक उपलब्ध हो जाएँगे। फर्में चूँकि अपनी क्षमता से नीचे ही काम कर रही हैं, वर्तमान से अधिक उत्पादन करने के लिए अतिरिक्त उत्पादन लागत कम ही रहने वाली है। ऐसी परिस्थितियों में, समग्र कीमत स्तर में शून्य अथवा किंचित ही वृद्धि होगी।

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर



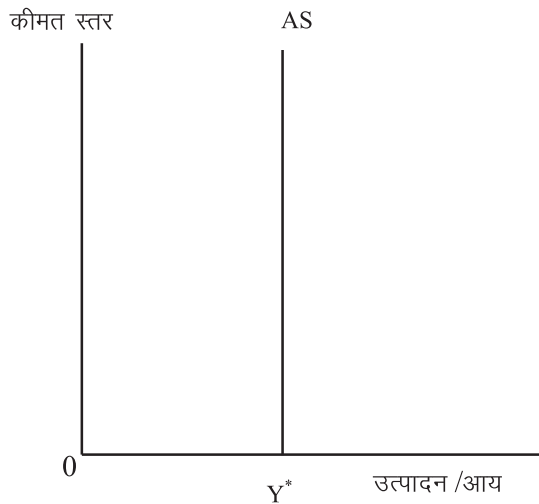
चित्र 5.1: अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र

यही कारण है कि उत्पादन स्तर परिवर्तित होने पर फर्मों की औसत उत्पादन लागत अपरिवर्तित रहने की ही अपेक्षा की जाती है। फर्में तदनुसार विद्यमान कीमत स्तर पर माँग की गई मात्रा की यथासंभव आपूर्ति करने को तत्पर रहती हैं। अर्थव्यवस्था में समग्र उत्पादन जब निम्न स्तरों पर ही नजर आता हो तो मंदी के इस दौर में AS वक्र क्षैतिज ही दिखाई देगा।

जैसा कि आपको ज्ञात ही है, किसी भी व्यापार चक्र के दो महत्वपूर्ण चरण होते हैं, यथा विस्तार और शिथिलता। शिथिलता अर्थात् मंदी के दौरान अर्थव्यवस्था में समग्र उत्पादन घटता नजर आता है। जब अर्थव्यवस्था मंदी के दौर से गुजर रही हो तो उसके पास अतिरिक्त क्षमता देखने में आती है। यदि फर्में अर्थव्यवस्था में व्याप्त इस शिथिलता को अल्पावधिक मानकर चल रही हों तो वे अतिरिक्त क्षमता बढ़ाकर ही रखेंगी। ऐसी स्थिति में, यदि माँग बढ़ती है तो फर्में कीमतों से कहीं अधिक उत्पादन बढ़ाएँगी।

5.5 दीर्घावधि में समग्र आपूर्ति वक्र

परंपरागत अर्थशास्त्रियों के अनुसार, AS वक्र ऊर्ध्वस्थ होता है, जो यह दर्शाता है कि उत्पादन पूर्ण रोजगार स्तर पर है। यह परंपरागत AS वक्र इस अवधारणा पर आधारित होता है कि श्रम बाजार श्रमबल के पूर्ण रोजगार के साथ साम्यावस्था में है। यदि किसी क्षेत्र विशेष में विनिर्माताओं के समक्ष ऊँची माँग हो तो अपने उत्पाद की कीमत बढ़ा देते हैं। जब उस क्षेत्र में ऊँची माँग के कारण उच्च वृद्धि देखने में आती है तो वे और अधिक निवेश की योजना बना लेते हैं (यथा, ज्यादा मशीनें, उच्चतर मात्रा में सामग्रियाँ, तथा पहले से अधिक श्रमिक आदि का क्रय करते हैं)। इसके गौण प्रभाव स्वरूप, उत्पादन के कारक निम्न माँग क्षेत्रों से खिसककर उच्च माँग क्षेत्रों में चले जाते हैं। परंतु यदि वस्तु एवं सेवाओं की उच्चतर माँग समस्त अर्थव्यवस्था में व्याप्त हो और उत्पादन के सभी कारक पहले ही नियोजित हों तो समग्र उत्पादन वृद्धि हेतु कोई रास्ता नहीं बचता। इसके फलस्वरूप कीमत वृद्धि तो होगी मगर आपूर्ति उतनी ही रहेगी। श्रमबल के पूर्ण रोजगार के अनुरूप उत्पादन स्तर संभावित सकल घरेलू उत्पाद, Y^* कहलाता है (देखें चित्र 5.3)।

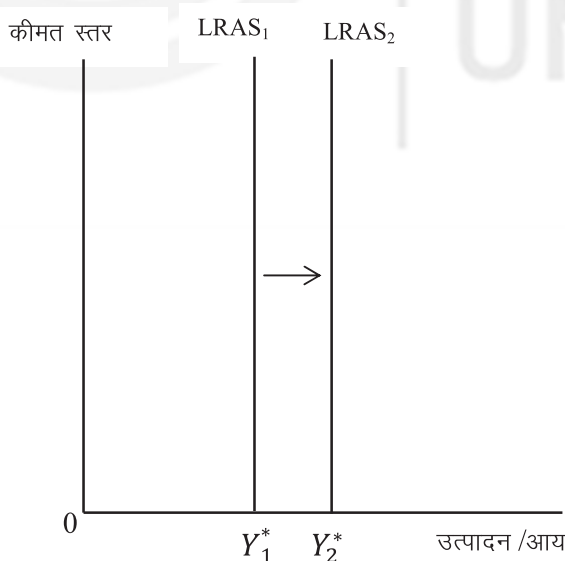


चित्र 5.3: परंपरागत समग्र आपूर्ति वक्र

हमने ऊपर अल्पावधि AS वक्र इस अवधारणा के साथ खींचा कि वेतन स्थिर थे। वैसे इसका अर्थ यह नहीं कि स्थिरता सदैव बनी रहती है। कालांतर में, वेतन दरें ऊँची कीमतों के अनुकूल हो जाती हैं। जब श्रमिक फर्मों के साथ अपने वेतनमान तय करते हैं तो दो बातों को ध्यान में रखते हैं : निकट अतीत में कीमत वृद्धि, और निकट भविष्य में प्रत्याशित कीमत वृद्धि। दीर्घ अवधि में, आगत कीमत ठीक उत्पादन कीमतों की दर से ही बदलते हैं। अतः, समग्र आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वस्थ हो जाता है। तदनुसार, दीर्घावधि में वास्तविक उत्पादन संभावित उत्पादन के बराबर ही होता है।

दीर्घावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव

कालांतर में संभावित उत्पादन का स्तर परिवर्तन दर्शाता है। आइए, संभावित उत्पादन में ऐसे बदलावों की वजह तलाशते हैं। ध्यान देने की बात है कि यदि श्रमिक संख्या, पूँजी भंडार, प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा, अथवा प्रौद्योगिकी की अवस्था में परिवर्तन देखे जाते हैं तो संभावित उत्पादन बदल जाता है।



चित्र 5.4: दीर्घावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव

तदनुसार, संवृद्धि के दो स्रोत होते हैं : पहला निवेश वृद्धि, और दूसरा प्रौद्योगिकीय प्रगति। कालांतर में अर्थव्यवस्था द्वारा संसाधन संचित कर लिए जाने के साथ ही संभावित जीडीपी में वृद्धि देखी जाती है। अब पहले से अधिक मशीनें, अधिक भवन, अधिक कच्चा वस्तु, आदि उपलब्ध होंगे। यह निवेश अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता में वृद्धि की ओर ले जाता है। दूसरा स्रोत, यथा प्रौद्योगिकीय प्रगति, कालांतर में अनेक क्षेत्रों में दिखाई पड़ने लगता है। आपने देखा ही होगा कि किस प्रकार एक से बढ़कर एक शक्तिशाली कंप्यूटर और मोबाइल फोन वर्ष दर वर्ष ईजाद होते रहे हैं। प्रौद्योगिकी में यह उन्नति अनेक क्षेत्रों में दिखाई पड़ रही है। प्रौद्योगिकीय प्रगति उत्पादकता अथवा दक्षता में वृद्धि की ओर अग्रसर करती है। इसका अर्थ है कि निवेश के उसी स्तर से हम और अधिक उत्पादन कर सकते हैं। तदनुसार, एक समयावधि विशेष में परंपरागत AS वक्र दाएँ खिसक जाता है। ध्यान देने की बात है कि संभावित उत्पादन स्तर में परिवर्तन कीमत स्तर पर निर्भर नहीं होते।

5.6 मध्यावधि में समग्र आपूर्ति वक्र

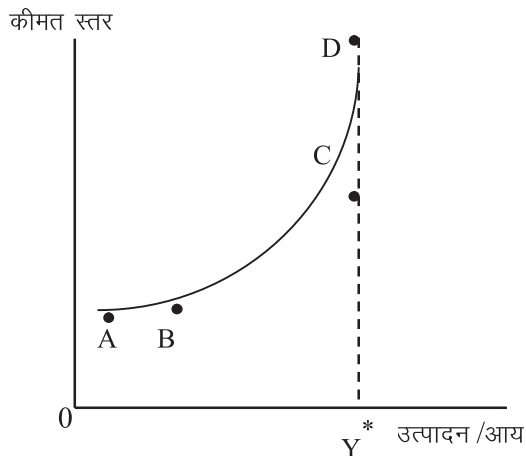
मध्यावधि एक ऐसी समयावधि होती है जिस दौरान अर्थव्यवस्था अपने स्थाई निवेश (माना, पूँजी) को अपने दीर्घावधि स्तर पर समंजित करती है। समष्टि अर्थशास्त्र में, हम मानकर चल सकते हैं कि लगभग 5 से लेकर 10 वर्ष की अवधि मध्यावधि की श्रेणी में आती है। ऊपर हमने जाना कि AS वक्र दीर्घावधि में ऊर्ध्वस्थ (परंपरागत) होता है और अल्पावधि में क्षैतिज (केन्जियन)। इन दोनों वक्रों के कुछ बीच की-सी स्थिति मध्यावधि में देखी जाती है, जबकि AS वक्र धनात्मक ढलान का देखा जाता है।

आइए, मध्यावधि गतिविज्ञान को समझें। यदि फर्मों के समक्ष उनके वस्तु व सेवाओं की ऊँची माँग होती है तो वे अल्पावधि में अधिक उत्पादन देकर प्रतिक्रिया देती हैं। चूँकि अब समग्र उत्पादन निरंतर बढ़ने लगता है, फर्मों और अर्थव्यवस्था अपनी पूर्ण क्षमता के निकट आ जाती हैं। ऐसा संभव नहीं है कि समग्र अर्थव्यवस्था यकायक उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर पर पहुँच जाए। जब समग्र माँग बढ़ती है तो फर्मों प्रतिक्रिया स्वरूप आरंभ में उत्पादन बढ़ा देती हैं। चूँकि समग्र माँग आगे भी बढ़ती ही रहती है, फर्मों कीमतें बढ़ाना शुरू कर देंगी। फर्मों अपने पूर्ण क्षमता सीमाओं तक भी पहुँचने लगती हैं; वे अल्पावधि में अपना उत्पादन नहीं बढ़ा पाती हैं।

जैसा कि व्यष्टि अर्थशास्त्र से आपको ज्ञात ही है, पूँजी एवं शीर्ष प्रबंधन जैसे कुछ निवेश अल्पावधि में ही स्थिर रहते हैं। कुछ फर्मों एवं उद्योग दूसरों से पहले ही अपनी अधिकतम उत्पादन क्षमता पर पहुँच जाते हैं; इसलिए AS वक्र में कोई व्याकुंचन नहीं दिखाई देगा। साथ ही, बेरोजगारी की दर में भी कोई गिरावट नहीं दर्ज नहीं होगी क्योंकि अर्थव्यवस्था पूर्ण क्षमता स्तर पर जा रही है। उत्पादन के किसी स्तर (Y^*) पर फर्मों के लिए और अधिक विस्तार वस्तुतः असंभव हो जाता है क्योंकि उत्पादन के सभी कारक पूर्णतः उपभोग होते हैं। उत्पादन के ऐसे स्तर पर, कीमत स्तर जो चाहे हो, उत्पादन और अधिक नहीं बढ़ सकता।

चित्र 5.5 में, हमने धनात्मक ढलान AS वक्र दर्शाया है। इस वक्र के खंड A से B तक कुछ अधिक समतल भाग नजर आता है (केन्जिय क्षेत्र), जबकि खंड C से D तक कुछ अधिक ढालू भाग दिखाई पड़ता है (परंपरागत क्षेत्र)। आप देखेंगे कि इस चित्र में तीनों समयावधियाँ (अल्पावधि, मध्यावधि और दीर्घावधि) सारबद्ध हैं। इस AS वक्र में वर्णित अभिलक्षण निम्नवत् हैं : बिंदु B के नजदीक तक अल्पावधि है; बिंदु B से लेकर बिंदु C तक मध्यावधि (मध्यवर्ती क्षेत्र) है; और बिंदु C से आगे दीर्घावधि है (उत्पादन Y^*)। व्यापार

मंदी के दौरान अर्थव्यवस्था AS वक्र के समतल भाग पर सक्रिय रहती है (केन्जिय दृष्टिकोण)। किसी भी अर्थव्यवस्था का अधिकतम उत्पादन Y^* होता है, यथा पूर्ण रोजगार उत्पादन (परंपरागत दृष्टिकोण)।

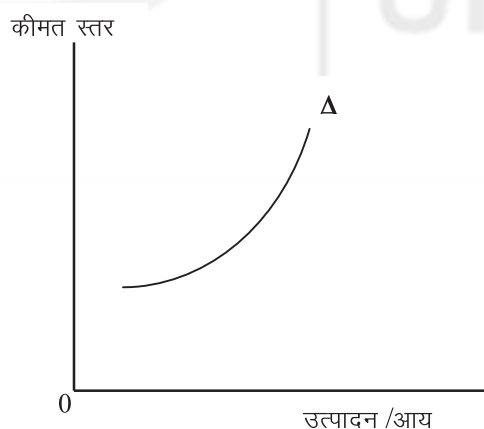


चित्र 5.5: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र

क्षैतिज AS वक्र की केन्जिय अवस्था और ऊर्ध्वस्थ AS वक्र की परंपरागत अवस्था अपवाद हैं। सामान्य परिस्थितियों में AS वक्र धनात्मक ढलान होता है। अतएव, अधिक विश्लेषण के लिए हम मध्यावधि AS वक्र पर विचार करते हैं।

5.6.1 मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र की प्रवणता

समस्त कीमत स्तर में परिवर्तनों पर आगत कीमतों की प्रतिक्रिया ही परंपरागत और केन्जिय अवधारणाओं के बीच अंतर का आधार होता है। परंपरागत अर्थशास्त्रियों के अनुसार, कीमत परिवर्तन पूर्णतः प्रत्याशित होता है। इसका अर्थ है कि उत्पादकों और परिवारों की अपेक्षाएँ पूरी होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि उत्पादक अपेक्षा करते हैं कि आने वाले साल में कीमतें 10 प्रतिशत तक बढ़ेंगी तो कीमतें वाकई ठीक 10 प्रतिशत तक बढ़ती हैं (न तो 10 प्रतिशत से ऊपर, न ही 10 प्रतिशत से नीचे)।



चित्र 5.6: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र

केन्जिय दृष्टिकोण, बहरहाल, यह इंगित करता है कि कीमत स्तर में कोई भी वृद्धि सदा पूर्ण प्रत्याशित नहीं होती। आगत कीमतों में परिवर्तनों और उत्पादन कीमतों में परिवर्तनों के बीच कुछ समय पतन देखा जाता है। दूसरे शब्दों में, वेतन दर स्थिर होती है। इसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी होते हैं : (i) मौद्रिक वेतन परिवर्तनशील आर्थिक दशाओं के प्रति धीमे समंजित होते हैं। इसका कारण श्रमिकों और फर्मों के बीच 'दीर्घावधि संविदाएँ' मानी जा सकती हैं। संविदा के भाग स्वरूप, प्रायः वेतन दर पहले ही तय कर ली जाती है। (ii) फर्मों को समंजन कीमतों के लिए लागत वहन करनी पड़ती है। चलिए, एक रेस्तराँ का उदाहरण लेते हैं। बाजार में सब्जियों के दाम आए दिन बढ़ते-घटते रहते हैं; परंतु रेस्तराँ मालिक अपने मैन्सू कार्ड में व्यंजनों के दाम वही दर्शाते हैं। यदि वे व्यंजनों के दाम सब्जियों के दामों के अनुसार बदलना चाहेंगे तो उन्हें अपने मैन्सू कार्ड जल्दी-जल्दी छपवाने पड़ेंगे। इन मैन्सू कार्डों की छपाई और वितरण लागत उनके लाभ का बड़ा हिस्सा हजम कर जाएगी! एक इसी प्रकार की स्थिति अन्य फर्मों के समक्ष आती है और वे अपनी कीमतें तब तक नहीं बदलते जब तक कि अर्थव्यवस्था में भाव रुझान स्पष्ट और महत्वपूर्ण न हो। केन्जिय अर्थशास्त्री इस कारण को 'मैन्सू कॉस्ट' की संज्ञा देते हैं। (iii) ग्राहक जो वस्तुएँ और सेवाएँ क्रय करते हैं वे उनके कुछ दामों के अभ्यस्त होते हैं। वे कीमतों को उसी स्तर पर देखना पसंद करते हैं और कीमत वृद्धि का विरोध करते हैं। बाजार में अपना स्थान और ग्राहकों में अपनी साख बनाए रखने के लिए, फर्मों कीमतें बारंबार नहीं बढ़ातीं। इस प्रकार, कीमतें कालांतर में धीमे-धीमे ही बदलती हैं। अतएव, समग्र आपूर्ति वक्र धनात्मक ढलान दर्शाता है।

5.6.2 मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव

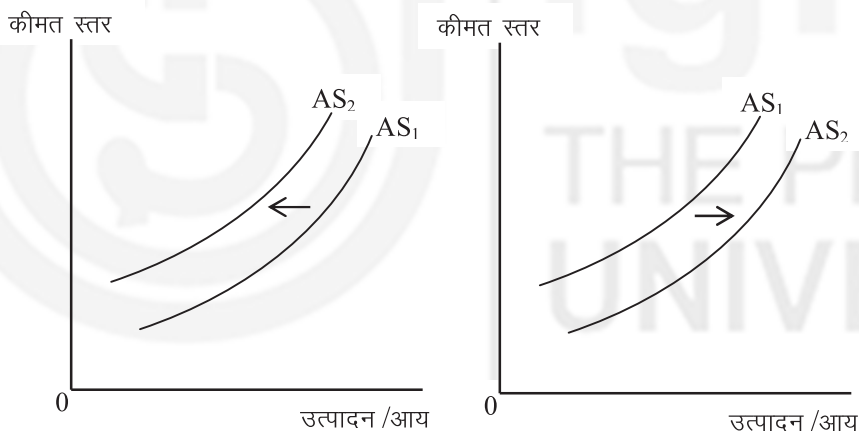
अब आप जान चुके हैं कि AS वक्र अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत उत्पादन और कीमत स्तर के बीच संबंध की व्याख्या करता है। तदनुसार, कीमतों में कोई भी परिवर्तन AS वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक संचलन में परिणत होगा। कीमतों के अलावा, ऐसे अनेक कारक हैं जो समग्र उत्पादन को प्रभावित करते हैं। जब हम AS वक्र खींचते हैं तो हम यह मानकर चलते हैं कि अन्य कारक स्थिर रहेंगे। इस प्रकार, इन कारकों में कोई भी परिवर्तन AS वक्र को खिसका देता है। आइए, इन कारकों को पहचानें।

वैयक्तिक फर्म के निर्णय को प्रभावित करने वाली कोई भी चीज (वस्तु की कीमत के अलावा) अल्पावधि में समग्र आपूर्ति वक्र को खिसका सकता है। तदनुसार, AS वक्र को खिसकाने वाले अनेक कारक होते हैं, यथा — आपूर्ति प्रघात, आर्थिक संवृद्धि, गतिहीनता, सार्वजनिक नीति, और प्राकृतिक आपदाएँ। आइए, इन कारकों पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

- (i) **आगत कीमत :** यदि आगत कीमत गिरते हैं तो उत्पादन लागत भी घट जाती है। इसका अर्थ है कि फर्मों प्रदत्त बजट में कहीं अधिक उत्पादन दे सकती हैं। तदनुसार, AS वक्र में दाहिने खिसकाव देखा जाता है। इस प्रकार का खिसकाव चित्र 5.7 के खंड (b) में दर्शाया गया है। इसी प्रकार, यदि आगत कीमतों में कोई वृद्धि होती है तो उत्पादन लागत में भी वृद्धि देखी जाएगी। यहाँ AS वक्र बाईं ओर खिसकेगा, जैसा कि चित्र 5.7 के खंड (a) में दर्शाया गया है। आगत कीमतों में उतार-चढ़ाव एक सामान्य दृश्यघटना है। कच्चे तेल की कीमतों में आवधिक वृद्धियाँ आपने देखी ही होंगी, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को गहरे प्रभावित करता है।
- (ii) **प्रौद्योगिकीय प्रगति :** खंड 5.5 में हमने AS वक्र पर प्रौद्योगिकीय प्रगति के प्रभाव के विषय में चर्चा की। प्रौद्योगिकी में उन्नति फर्मों की उत्पादकता बढ़ा देती

है। प्रौद्योगिकीय प्रगति के फलस्वरूप AS वक्र दाएँ खिसक जाता है (देखें चित्र 5.7 का खंड (b))।

- (iii) **सार्वजनिक नीति** : सरकार फर्मों को प्रोत्साहन प्रदान करती है ताकि आर्थिक संवृद्धि में गति आ सके। ये प्रोत्साहन फर्मों के लिए कर कटौतियों अथवा आधारिक संरचना निर्माण (जैसे सड़कें, विद्युत आपूर्ति, संचार, आदि) पर उच्चतर राजकीय व्यय के रूप में हो सकते हैं। ऐसे प्रोत्साहन फर्मों की उत्पादन लागत घटाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप AS वक्र दाएँ खिसक जाता है। इसके विपरीत, यदि सरकारी नीतियाँ उत्पादन लागत बढ़ाने वाली हों (जैसे कठोरतर पर्यावरण संबंधी मानक, कर दर में वृद्धि, आधारिक संरचना पर सार्वजनिक व्यय में कमी) तो AS वक्र में बाईं ओर खिसकाव देखा जाता है। आप देखेंगे कि पारिवारिक आय पर कर दर में परिवर्तन AD वक्र को प्रभावित करते हैं, न कि AS वक्र को।
- (iv) **व्यापार मंदी** : व्यापार चक्र AS वक्र को प्रभावित करते हैं। मंदी छाई होने पर वस्तु-सूचियों का जमावड़ा देखा जाता है और फर्मों भविष्य के प्रति निराश दिखाई देती हैं। वस्तु व सेवाओं की माँग भी अधिक नहीं नजर आती। ऐसी परिस्थितियों में AS वक्र बाएँ खिसक जाता है (जैसा कि चित्र 5.7 के खंड (a) में दर्शाया गया है)। इसके विपरीत, किसी व्यापार चक्र के विस्तार सोपान में, फर्मों अपनी व्यापार संक्रियाओं में आशावादी होती हैं। इस दौर में AS वक्र दाएँ खिसकता है (जैसा कि चित्र 5.7 के खंड (b) में दर्शाया गया है)।
- (v) **प्राकृतिक आपदाएँ** : अर्थव्यवस्थाओं पर प्रायः बाढ़, सूखा, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं का खतरा मंडराया करता है। ऐसी आपदाएँ उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं और वक्र को बाएँ खिसका देती हैं।



चित्र 5.7: मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव

बोध प्रश्न 2

- 1) केन्जिय अवधारणा के अनुसार स्पष्ट करें कि अल्पावधि समग्र आपूर्ति वक्र क्षैतिज क्यों होता है।

.....

.....

.....

.....

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

- 2) मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र के ऊर्ध्वमुखी प्रवण होने के कारण स्पष्ट करें।
.....
.....
.....
.....
.....
- 3) उन कारकों पर प्रकाश डालें जो समग्र आपूर्ति वक्र को दाएँ खिसकाकर अपना असर दिखाते हैं (उपयुक्त आरेख से दर्शाएँ)।
.....
.....
.....
.....
.....

5.7 सार—संक्षेप

समष्टि अर्थशास्त्र में समग्र आपूर्ति (AS) वक्र व्यष्टि अर्थशास्त्र में बनने वाले आपूर्ति वक्र से भिन्न होता है। इस इकाई में हमने समग्र आपूर्ति विषयक परंपरागत और केन्जिय अवधारणाओं पर चर्चा की, जो कि किसी भी अर्थव्यवस्था में कीमत एवं उत्पादन स्तरों पर सशक्त महत्व रखता है। चूँकि केन्जिय अवधारणा के अनुसार समय क्षितिज बहुत महत्वपूर्ण होता है, हमने अल्पावधि, दीर्घावधि और मध्यावधि से संबद्ध समग्र आपूर्ति वक्र की विभिन्न आकृतियों पर चर्चा की। यह समग्र आपूर्ति वक्र अल्पावधि में क्षैतिज होता है; दीर्घावधि में ऊर्ध्वस्थ होता है; और मध्यावधि में धनात्मक ढलान होता है। हमने AS वक्र के खिसकाव हेतु उत्तरदायी कारकों पर भी चर्चा की। हमने स्पष्ट किया कि परंपरागत समग्र आपूर्ति वक्र और केन्जिय दीर्घावधि समग्र आपूर्ति वक्र दोनों ही ऊर्ध्वस्थ होते हैं; हालाँकि उनके कारण भिन्न-भिन्न होते हैं।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

- 1) कीमत उत्पादन प्रतिक्रिया वक्र एक ऐसा वक्र है जो दशाओं की किसी ज्ञात शृंखला के तहत अर्थव्यवस्था में विद्यमान सभी फर्मों के कीमत निर्णय और उत्पादन निर्णय दर्शाता है।
- 2) परंपरागत अवधारणा के अनुसार, संसाधन अर्थव्यवस्था में पूर्ण नियोजित होते हैं और इस कारण सभी फर्म अपनी पूर्ण क्षमता से काम कर रही हैं। दूसरी ओर, केन्जिय अवधारणा के अनुसार, अर्थव्यवस्था उस अतिरिक्त क्षमता को नजर में रखती है जिसे माँग बढ़ने पर इस्तेमाल किया जा सकता हो ताकि पहले से अधिक उत्पादन कर एक उच्चतर उत्पादन स्तर हासिल किया जा सके।
- 3) परंपरागत अवधारणा के अनुसार, कीमतों में बदलाव उत्पादन स्तर में बिना किसी परिवर्तन के होंगे जबकि केन्जिय अवधारणा के अनुसार, कीमत परिवर्तनों के साथ उत्पादन स्तर में भी परिवर्तन दिखाई देंगे।

- 1) केन्जिय समग्र आपूर्ति वक्र अल्पावधि में क्षैतिज होता है, जो यह दर्शाता है कि वस्तु की माँग चाहे जितनी मात्रा में हो फर्में वर्तमान कीमत स्तर पर उसकी आपूर्ति करेंगी। इस प्रकार के किसी भी वक्र में यह अवधारणा निहित होती है कि अल्पावधि में फर्मों के पास अतिरिक्त क्षमता होती है। इसका अर्थ है कि फर्मों के पास अतिरिक्त पूँजी अथवा श्रमबल होता है जो कि उत्पादन के वर्तमान स्तर पर परिणाम देने के लिए जरूरी नहीं होता।
- 2) समग्र आपूर्ति (AS) वक्र निम्नलिखित कारणों से धनात्मक ढलान होता है : (i) मौद्रिक वेतन परिवर्तनशील आर्थिक दशाओं के प्रति धीमे ही समंजित होते हैं; (ii) फर्मों को कीमत समंजित करने के लिए लागत उपगत करनी पड़ती है। इन्हें 'मैन्यू कॉस्ट' कहा जाता है; और (iii) सामाजिक मानदंड और निष्पक्षता संबंधी अवधारणाएँ यह अपेक्षा करती हैं कि फर्में कीमतें बारंबार न घटाएँ—बढ़ाएँ।
- 3) ऐसे अनेक कारक हैं जो समग्र आपूर्ति वक्र को प्रभावित करते हैं और फलस्वरूप AS वक्र को खिसका ही देते हैं। ये कारक आपूर्ति आघात, सार्वजनिक नीति, व्यापार चक्र, प्राकृतिक आपदाएँ, आदि हो सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों की पहचान करें जो AS वक्र को दाएँ खिसका देंगी। विस्तृत जानकारी के लिए उप-अनुभाग 5.6.2



इकाई 6 संतुलन उत्पादन और कीमतें *

इकाई की रूपरेखा

- 6.0 उद्देश्य
- 6.1 विषय—प्रवेश
- 6.2 अल्पावधि संतुलन
- 6.3 दीर्घावधि संतुलन
- 6.4 राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियों का प्रभाव
- 6.5 स्थिति अध्ययन
 - 6.5.1 आपूर्ति आघात
 - 6.5.2 माँग आघात
- 6.6 सार—संक्षेप
- 6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

6.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि :

- किसी अर्थव्यवस्था में अल्पावधि संतुलन और दीर्घावधि संतुलन के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें;
- वास्तविक उत्पादन और संभावित उत्पादन के बीच अंतर स्पष्ट कर सकें;
- संतुलन उत्पादन और कीमतों पर राजकोषीय व मौद्रिक नीतियों का प्रभाव पहचान सकें;
- मुद्रास्फीति के पदों में अर्थव्यवस्था पर आपूर्ति आघातों का प्रभाव स्पष्ट कर सकें; तथा
- किसी विस्तारकारी समष्टि-अर्थशास्त्रीय नीति के परिणाम पर AS वक्र की आकृति के निहितार्थों का मूल्यांकन कर सकें।

6.1 विषय—प्रवेश

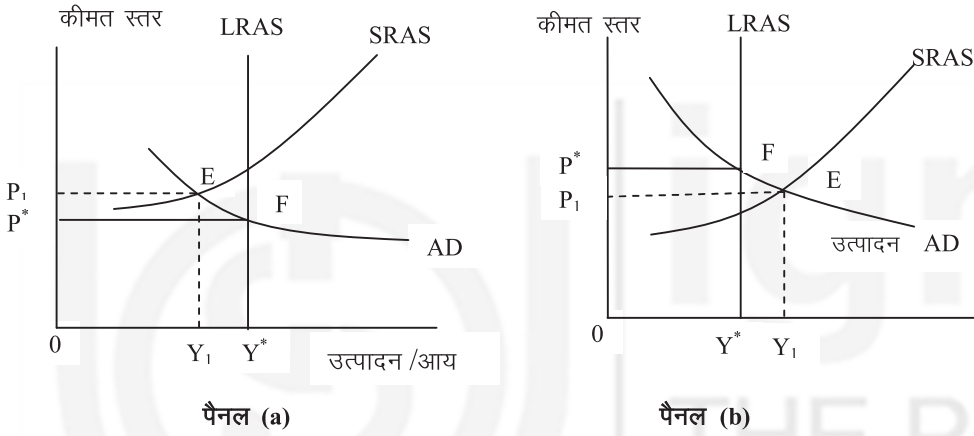
पिछली दो इकाइयों में हमने कुल माँग (AD) और कुल आपूर्ति (AS) वक्रों पर चर्चा की थी। अब हम समष्टि-अर्थशास्त्रीय दृष्टि से किसी अर्थव्यवस्था के संतुलन को स्पष्ट कर सकते हैं। इकाई 4 से स्मरण करें कि कुल माँग वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार में संतुलन दर्शाती है (AD वक्र IS-LM मॉडल से अवकलित किया जाता है)। कुल आपूर्ति, दूसरी ओर, वस्तुतः एक मूल्य-उत्पादन प्रतिक्रिया वक्र होता है, जिसकी कमी है कि वह अधिकतम उत्पादन ही दर्शाता है। जब वस्तु व सेवाओं की कुल माँग व कुल आपूर्ति की तुलना की जाती है तो हमें अर्थव्यवस्था में उत्पादन और कीमतों का संतुलन स्तर ज्ञात होता है। तदनुसार, AD और AS वक्रों का प्रतिच्छेदन अर्थव्यवस्था का संतुलन स्तर (Y) और कीमत स्तर (P) दर्शाता है। इस इकाई में हम उन कारकों पर भी चर्चा करेंगे जो संतुलन उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, हम संतुलन उत्पादन एवं कीमतों पर मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों के प्रभावों पर विचार करेंगे। साथ ही, विषय को बेहतर समझने के लिए हम कुछ स्थिति अध्ययन भी विचारार्थ लेंगे।

* प्रो. कौस्तुभ बारिक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं डॉ. निधि तेवतिया, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

पिछली इकाई में हमने जाना कि AS वक्र अल्पावधि में क्षैतिज होता है; मध्यावधि में धनात्मक ढलान होता है; और दीर्घावधि में ऊर्ध्वस्थ होता है। वैसे क्षैतिज और ऊर्ध्वस्थ AS वक्र अपवाद ही हैं। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि AS वक्र पूर्णतः समतल नहीं होता; जब कभी कुल माँग बढ़ती है, कीमत स्तर भी बढ़ जाता है। तदनुसार, दो परिदृश्य उत्पन्न होते हैं : (i) अल्पावधि और मध्यावधि में AS वक्र धनात्मक ढलान होता है, तथा (ii) दीर्घावधि में AS वक्र ऊर्ध्वस्थ होता है। अतः आगे की चर्चा में हम दो प्रकार के AS वक्रों पर विचार करेंगे : अल्पावधि कुल आपूर्ति वक्र (SRAS) दीर्घावधि कुल आपूर्ति वक्र (LRAS)।

6.2 अल्पावधि संतुलन

अल्पावधि संतुलन तब दृष्टिगत होता है जब SRAS और AD वक्र परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं। चित्र 6.1 (खंड (a)) में हमने SRAS में हमने AD वक्र प्रस्तुत किए हैं। ये वक्र बिंदु E पर प्रतिच्छेद करते हैं। यहाँ संतुलन उत्पादन और कीमत स्तर क्रमशः Y_1 और P_1 के रूप में प्राप्त होते हैं।



चित्र 6.1: अल्पावधि संतुलन

चित्र 6.1 पैनल (a) में हम LRAS वक्र को SRAS और AD वक्रों के साथ ही अध्यारोपित करते हैं। हम पाते हैं कि अर्थव्यवस्था में अल्पावधि संतुलन उत्पादन पूर्ण रोजगार संतुलन उत्पादन (Y^*) की तुलना में कम ही रहता है। उपर्युक्त का अर्थ है कि अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्षमता विद्यमान है। इसका मतलब कालांतर में अर्थव्यवस्था दीर्घावधि संतुलन उत्पादन (Y^*) की ओर बढ़ेगी। इस इकाई में अल्पावधि संतुलन से दीर्घावधि संतुलन में परिवर्तन प्रक्रिया पर चर्चा हम बाद में करेंगे।

सामान्यतया, अल्पावधि संतुलन उत्पादन स्तर पूर्ण-रोजगार उत्पादन स्तर से नीचे (Y^*) ही रहता है परंतु कुछ अवसरों पर इसे पूर्ण रोजगार स्तर के दाएँ भी देखा जा सकता है। चित्र 6.1 के पैनल (b) में हमने एक ही स्थिति दर्शाई है। यहाँ बिंदु E संतुलन है। संतुलन उत्पादन और कीमत क्रमशः Y_1 और P_1 पर अवस्थित हैं।

कुछ अर्थशास्त्रियों का विश्वास है कि अर्थव्यवस्था में Y^* की ओर दोलन करने की प्रवृत्ति होती है।

अनेक परिस्थितियों में उत्पादन Y^* से ऊपर भी जा सकता है, परंतु जब वह पूर्ण रोजगार उत्पादन स्तर से ऊपर काम करती है तो वेतन दर पर ऊपर की ओर दबाव देखा जाता है। जब अर्थव्यवस्था अल्पावधि क्षमता हासिल कर लेती है तो वेतन दरें बढ़ने लगती हैं

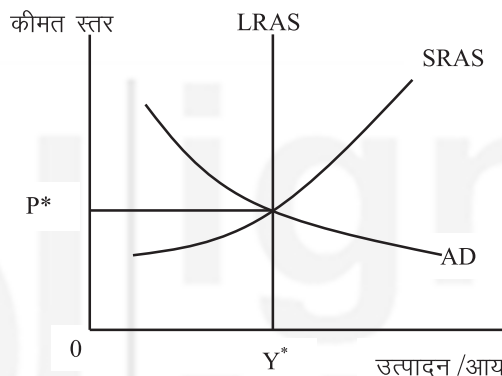
सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

क्योंकि फर्मों श्रमबल की ओर पहले से अधिक लोगों को आकर्षित करने और पहले से अधिक श्रमिकों को समयोपरि कार्य करने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करती हैं। बढ़ते वेतन उत्पादन लागत बढ़ा देते हैं और वक्र को बाएँ खिसका देते हैं, जिससे उत्पादन वापस Y^* की ओर चला जाता है।

जब अल्पावधि संतुलन Y^* से नीचे होती है तो उत्पादन बढ़ने लगता है। इसका अर्थ है कि जब अर्थव्यवस्था अतिरिक्त क्षमता और अत्यधिक बेरोजगारी के साथ पूर्ण रोजगार स्तर से नीचे काम कर रही हो तो वेतन दरें घटने लगती हैं। वेतन दरों में कोई भी गिरावट SRAS वक्र को दाएँ खिसका देती है, जिससे कीमत स्तर घट जाता है और कुल उत्पादन स्तर बढ़कर वापस Y^* पर चला जाता है। यह स्वतः समंजन तभी कारगर सिद्ध होता है जब वेतन दर लचीली होती है; अर्थव्यवस्था में अतिरिक्त क्षमता और बेरोजगारी विद्यमान होने पर यह घट जाती है।

6.3 दीर्घावधि संतुलन

दीर्घावधि संतुलन पर पहुँचने के लिए हम कुल माँग वक्र और दीर्घावधि कुल आपूर्ति (LRAS) वक्र पर विचार करेंगे। संतुलन पर उत्पादन उतना ही रहता है क्योंकि आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वस्थ होता है।



चित्र 6.2: दीर्घावधि संतुलन

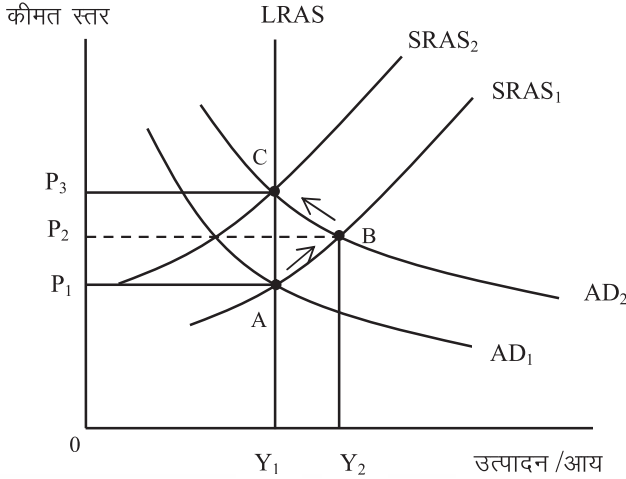
दीर्घावधि में, हम देखते हैं कि SRAS और AD का प्रतिच्छेदन भी वही उत्पादन स्तर दर्शाता है। इसका अर्थ है कि Y^* से चित्र 6.1 में अल्पावधि उत्पादन स्तर का विचलन दीर्घावधि में कोई अस्तित्व नहीं रखता।

यहाँ तक कि SRAS वक्र भी कुछ विशिष्ट उत्पादन स्तरों (संभावित जीडीपी अथवा पूर्ण रोजगार स्तर) पर ऊर्ध्वस्थ नजर आ सकता है। ऐसा इसलिए होता है कि किसी भी दी गई अवधि में किसी भी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित की जाने वाली मात्रा की कुछ भौतिक सीमाएँ अवश्य होती हैं। इस भौतिक सीमा पर, सभी संयंत्र चौबीस घंटे काम कर रहे होते हैं, अनेक श्रमिक समयोपरि कार्य कर रहे होते हैं, और कहीं भी चक्रीय बेरोजगारी नजर नहीं आती।

आइए, चित्र 6.3 में, एक अर्थव्यवस्था में चल रही समंजन प्रक्रिया पर दृष्टि डालें। मान लीजिए कि यह अर्थव्यवस्था $SRAS_1$ और कुल माँग वक्र AD_1 के साथ काम कर रही है। तदनुसार, संतुलन क्रमशः Y_1 और P_1 के रूप में ज्ञात उत्पादन और कीमतों के साथ A पर है। चूँकि LRAS वक्र बिंदु A, से होकर गुजरता है, दीर्घावधि संतुलन भी नजर आने लगती है (Y_1 पूर्ण रोजगार स्तर Y^* निरूपित करता है)।

अब मान लीजिए कि कुल माँग में वृद्धि होती है। परिणामतः कुल माँग (AD) वक्र में AD_1 से लेकर AD_2 तक खिसकाव देखा जाता है। स्मरण रहे कि इस अर्थव्यवस्था की उत्पादन

क्षमता अल्पावधि में नहीं बढ़ाई जा सकती। तदनुसार, यह अर्थव्यवस्था $SRAS_1$ के साथ काम करती रहेगी; हम $SRAS$ वक्र के एक छोर से दूसरे छोर तक जाएँगे। कुल माँग वक्र में खिसकाव के प्रत्युत्तर में कीमत स्तर और कुल उत्पादन दोनों P_1, Y_1 से ऊपर खिसककर P_2, Y_2 पर पहुँच जाते हैं। नयी संतुलन बिंदु B पर दर्शाई जाती है, जहाँ $SRAS_1$ और AD_2 परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं (देखें चित्र 6.3)।



चित्र 6.3: दीर्घावधि कुल आपूर्ति वक्र

आप देखेंगे कि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ कीमत स्तर में भी वृद्धि हुई है। कीमत वृद्धि के प्रतिक्रिया स्वरूप श्रमिक वर्ग वेतन दर में वृद्धि की माँग करेगा। बिंदु Y_1 के बढ़कर Y_2 पर पहुँच जाने के रूप में धनात्मक ढलान $SRAS_1$ वक्र का विचलन इस अवधारणा के साथ होता है कि कीमत स्तर में वृद्धि और वेतन दर में वृद्धि के बीच कुछ पश्चायन होता ही है; वेतन दर में बढ़ोतरी बाद में होती है।

जब वेतन दर में वृद्धि होती है तो उत्पादन लागत में भी वृद्धि देखी जाती है। अल्पावधि कुल आपूर्ति वक्र $SRAS_1$ से बाएँ खिसककर $SRAS_2$ पर पहुँच जाता है (देखें चित्र 6.3)। यदि वेतन दर में वृद्धि कीमत वृद्धि के अनुपात में ही होती हो तो उत्पादन वापस Y_1 पर आ जाता है (यथा, चित्र 6.3 में बिंदु C पर, जहाँ AD_2 और $SRAS_2$ परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं)। अतः जब वेतन दरें कीमतों से पूर्णतः समंजित होती हों तो संतुलन $LRAS$ वक्र पर होती है, जो उत्पादन का पूर्ण रोजगार स्तर दर्शाता है। आप देखेंगे कि संतुलन बिंदु A से खिसककर बिंदु B पर पहुँच जाती है और अंततः बिंदु C पर जाकर ठहर जाती है। दीर्घावधि में, कुल माँग में वृद्धि ने केवल कीमत वृद्धि की ओर ही अग्रसर किया है; उत्पादन उतना ही रहा है।

उत्पादन अंतराल

वास्तविक उत्पादन और पूर्ण-रोजगार उत्पादन के बीच अंतर को 'उत्पादन अंतराल' की संज्ञा दी जाती है। तदनुसार, उत्पादन अंतराल = $(Y_a - Y^*)$, जहाँ Y_a वास्तविक उत्पादन है और Y^* संभावित उत्पादन।

वास्तविक उत्पादन AD और $SRAS$ वक्रों के प्रतिच्छेदन के अनुसार निर्धारित किया जाता है। संभावित उत्पादन AD और $LRAS$ वक्रों के प्रतिच्छेदन से दर्शाया जाता है।

आइए, एक बार फिर चित्र 6.1 पर दृष्टि डालें। इस चित्र में, Y^* और Y_1 के बीच अंतर ही उत्पादन अंतराल है। उत्पादन अंतराल धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो सकता है।

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

जब संसाधनों का प्रयोग दक्षतापूर्वक नहीं किया जाता (यथा, वे अल्प-प्रयुक्त ही रहते हैं) तो वास्तविक जीडीपी संभावित जीडीपी से नीचे ही रहती है और एक ऋणात्मक उत्पादन अंतराल दिखाई पड़ता है (देखें चित्र 6.1, पैनल (a))। दूसरी ओर, जब वास्तविक उत्पादन पूर्ण-रोजगार उत्पादन से अधिक होता है तो उत्पादन अंतराल धनात्मक होता है (देखें चित्र 6.1, पैनल (b))।

स्मरण रहे कि कालांतर में प्रौद्योगिकीय प्रगति और संसाधनों के संचय के साथ संभावित उत्पादन बढ़ सकता है। संभावित उत्पादन कुल माँग के स्तर पर निर्भर नहीं करता। आपको याद ही होगा कि इस प्रकार का दृष्टिकोण परंपरागत अर्थशास्त्रियों द्वारा व्यक्त किया गया था।

बोध प्रश्न 1

1) उचित आरेख के माध्यम से किसी अर्थव्यवस्था की अल्पावधि संतुलन स्पष्ट करें।

.....
.....
.....
.....
.....

2) उचित आरेख के माध्यम से किसी अर्थव्यवस्था की दीर्घावधि संतुलन स्पष्ट करें।

.....
.....
.....
.....
.....

3) उत्पादन अंतराल को परिभाषित कर उसे एक आरेख के माध्यम से दर्शाएँ।

.....
.....
.....
.....
.....

4) यदि अल्पावधि में वास्तविक जीडीपी संभावित जीडीपी के दाएँ अवस्थित हो तो दीर्घावधि में कोई अर्थव्यवस्था स्वयं को कैसे समंजित करती है?

.....
.....
.....
.....

6.4 राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों का प्रभाव

पिछले खण्ड में हमने देखा कि AD और AS वक्रों में खिसकाव उत्पादन और कीमतों के संतुलन स्तरों को प्रभावित करते हैं। पिछली दो इकाइयों में हमने ऐसे खिसकावों के लिए जिम्मेदार कारकों पर चर्चा की थी। आइए, अब उन कारकों पर समष्टि-अर्थशास्त्रीय नीति के दृष्टिकोण से विचार करें। जैसा कि आपको ज्ञात ही होगा, समष्टि-अर्थशास्त्रीय नीति दो वृहद श्रेणियों में स्पष्ट की जाती है, यथा (i) राजकोषीय नीति, और (ii) मौद्रिक नीति। इन दोनों ही नीतियों का उद्देश्य अर्थव्यवस्था – विशेषकर आर्थिक संवृद्धि मुद्रास्फीति, रोजगार सृजन, आदि समष्टि-अर्थशास्त्रीय चरों – को प्रभावित करना होता है। राजकोषीय नीति का अभिप्राय उन निर्णयों से होता है जो सार्वजनिक व्यय एवं करों के संबंध में सरकार द्वारा लिए जाते हैं। मौद्रिक नीति का अभिप्राय, दूसरी ओर, मुद्रा आपूर्ति और ब्याज दर के संबंध में किसी देश के केन्द्रीय बैंक (जैसे भारत के उदाहरण में भारतीय रिजर्व बैंक) द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों से होता है।

मूल रूप से, सरकार द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियाँ दो प्रकार की होती हैं : *विस्तारकारी* और *संकुचनकारी*। किसी भी अर्थव्यवस्था में सरकार अथवा उसका प्राधिकृत अभिकरण वांछित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मौद्रिक एवं राजकोषीय दोनों ही नीतियों के साधन प्रयोग करता है। व्यापार चक्रों से आप परिचित ही हैं, जो किसी भी अर्थव्यवस्था में आर्थिक उतार-चढ़ाव ले आते हैं। किसी भी व्यापार चक्र के विस्तारकारी चरण में संवृद्धि अपेक्षाकृत ऊँची होती है और बेरोजगारी अपेक्षाकृत कम। इस दौर में, अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति बढ़ने की संभावना देखी जाती है। दूसरी ओर, किसी भी व्यापार चक्र के मंदी चरण में आर्थिक वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी रहती है और बेरोजगारी अपेक्षाकृत अधिक। चूँकि सरकार की भूमिका आर्थिक स्थिरता कायम रखने की होती है, वह व्यापार चक्र के प्रभावों का सामना करने के लिए राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों का प्रयोग करती है। इस प्रकार, व्यापार चक्र के विस्तारकारी चरण में सरकार महँगाई से रक्षा करेगी— वह कोई संकुचनकारी नीति अपनाएगी।

राजकोषीय नीति : स्मरण करें कि दो राजकोषीय नीति चर हैं – सरकारी खरीद (G) और कर दरें (t)। हम इकाई 4 के खण्ड 4.4 में AD वक्र पर इन दो चरों के प्रभाव पर चर्चा कर चुके हैं। इसी प्रकार, इकाई 5 के उप-खण्ड 5.6.2 में हमने AS वक्र पर राजकीय व्यय और निवल करों पर चर्चा की थी। विस्तारकारी राजकोषीय नीति तब सामने आती है जब सरकार राजकीय व्यय बढ़ा देती है और/ अथवा कर दरें घटा देती है। जब कर दर घट जाती है तो परिवारों के पास अपेक्षाकृत अधिक प्रयोज्य आय होती है और उनकी उपभोग माँग बढ़ जाती है। तदनुसार, AD वक्र दाएँ खिसक जाता है। सरकार राजकीय व्यय घटाकर और / अथवा कर दरें बढ़ाकर किसी संकुचनकारी राजकोषीय नीति का सहारा लेती है।

मौद्रिक नीति : अर्थव्यवस्था को नियमित करने के लिए दो महत्वपूर्ण मौद्रिक नीति चर हैं – मुद्रा आपूर्ति (आपूर्ति धनराशि (M_s) और ब्याज दर। वैसे ये दोनों ही चर परस्पर जुड़े हैं। मुद्रा आपूर्ति में कोई भी वृद्धि ब्याज दर में गिरावट की ओर ले जाती है जबकि मुद्रा आपूर्ति में गिरावट ब्याज दर में वृद्धि की ओर। पाठ्यक्रम BECC 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत – I की इकाई 10 में हमने मौद्रिक नीति के महत्व एवं साधनों पर विस्तृत चर्चा

की थी। जैसा कि हमें ज्ञात है, ब्याज दर में कोई भी वृद्धि निवेश माँग के स्तर पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। दूसरी ओर, ब्याज दर में कोई भी गिरावट पूँजी की लागत में कमी ले आती है, जो कि फिर अर्थव्यवस्था में निवेश के स्तर में वृद्धि की ओर प्रवृत्त करती है।

अनेक केन्द्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में ब्याज दर पर नजर रखते हैं और अब यह मौद्रिक नीति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। किसी भी विस्तारकारी मौद्रिक नीति का पालन मुद्रा आपूर्ति बढ़ाकर और ब्याज दर घटाकर किया जा सकता है। जब ब्याज दर घटती है तो निवेश माँग में वृद्धि देखी जाती है और AD वक्र दाएँ खिसक जाता है। दूसरी ओर, किसी भी संकुचनकारी मौद्रिक नीति का पालन मुद्रा आपूर्ति घटाकर और ब्याज दर बढ़ाकर किया जा सकता है।

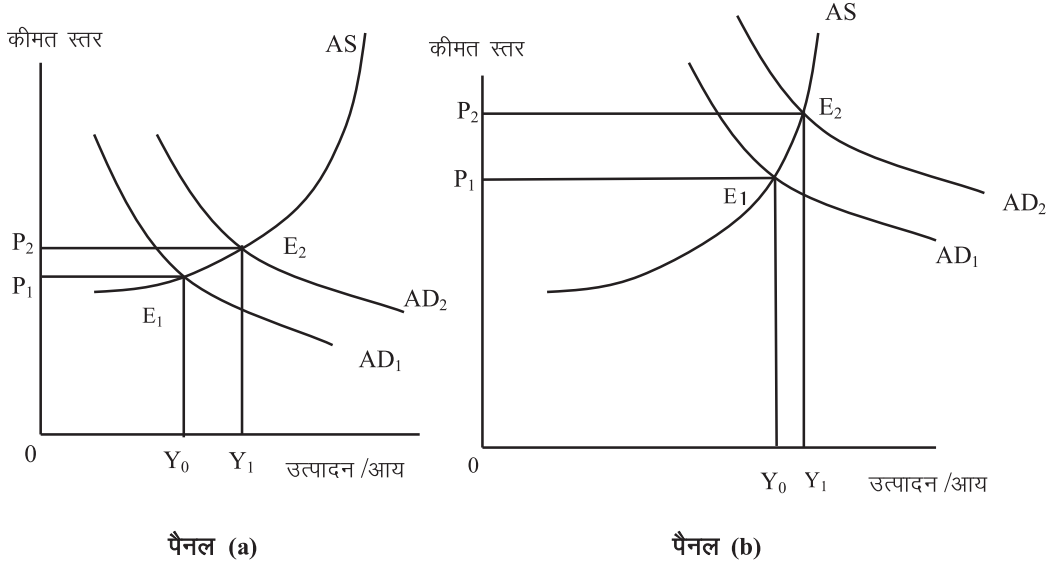
इस इकाई में हमने ऊपर देखा कि कोई भी विस्तारकारी मौद्रिक नीति AD वक्र को दाएँ खिसका देती है और, साथ ही, कोई भी संकुचनकारी मौद्रिक नीति AD वक्र को बाएँ खिसका देती है। चलिए, आगे AD वक्र में दाएँ खिसकाव के उदाहरण पर विचार करते हैं। कुल माँग में किसी गिरावट (AD वक्र में बाएँ खिसकाव) के प्रभाव की जाँच आप स्वयं करेंगे।

किसी नीति परिवर्तन के प्रभाव पर विचार करते समय हमें बहुत सावधानीपूर्वक SRAS वक्र की स्थिति और ढलान को देखना चाहिए। वास्तव में, वह सीमा जहाँ तक कुल माँग में किसी परिवर्तन के कारण उत्पादन और कीमत बदलेंगे, काफी हद तक, AS वक्र के ढलान पर निर्भर करेगी। चित्र 6.4 में हमने एक ऐसा AS वक्र दर्शाया है जो उत्पादन के निम्न स्तरों पर अपेक्षाकृत अधिक समतल मध्य खंड में धनात्मक ढलान और उत्पादन स्तर बढ़ने पर अपेक्षाकृत अधिक ऊर्ध्वस्थ नजर आता है।

उक्त चित्र (6.4) में, प्रारंभिक माँग और आपूर्ति वक्र क्रमशः AD_1 और AS_1 हैं। ये वक्र E_1 पर परस्पर प्रतिच्छेद करते हैं। उत्पादन एवं कीमतों के संतुलन स्तरों को क्रमशः Y_1 और P_1 से दर्शाया गया है। पैनल (a) एक ऐसी स्थिति दर्शाता है जहाँ AD और AS वक्रों के बीच प्रतिच्छेदन उत्पादन के एक निम्नतर स्तर पर है। इस खंड में AS वक्र की ढलान अपेक्षाकृत कम है। पैनल (b) में, दूसरी ओर, हमने एक ऐसी स्थिति दर्शाई है जहाँ AD और AS वक्रों के बीच प्रतिच्छेदन एक उच्चतर उत्पादन स्तर पर होता है। इस खंड में AS वक्र का ढलान अपेक्षाकृत अधिक है।

मान लीजिए कि सरकार एक विस्तारकारी नीति अपनाती है जिसके परिणामस्वरूप AD वक्र दाएँ खिसककर AD_1 से AD_2 पर आ जाता है। इस AD वक्र में खिसकाव के परिणाम पैनल (a) और पैनल (b) में भिन्न हैं।

यदि अर्थव्यवस्था आरंभतः AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक समतल भाग पर हो, जैसा कि चित्र 6.4 के पैनल (a) में दर्शाया गया है, तो कोई भी विस्तारकारी नीति कीमतों में बस थोड़ी-सी वृद्धि में परिणत होगी परंतु उत्पादन में वृद्धि संतोषजनक होगी। संतुलन Y में वृद्धि (Y_0 से Y_1 तक) संतुलन P में वृद्धि (P_0 से P_1 तक) की अपेक्षा कहीं अधिक देखी जाती है। यही ऐसा प्रकरण है जिसमें कोई भी विस्तारकारी नीति अच्छा काम करती है। यहाँ कीमत स्तर में बहुत कम वृद्धि के साथ उत्पादन में वृद्धि देखी जाती है।



चित्र 6.4: संतुलन उत्पादन एवं कीमतों पर विस्तारकारी नीति का प्रभाव

यदि प्रारंभिक संतुलन AS वक्र के अधिक ढलान वाले भाग पर हो, जैसा कि चित्र 6.4 के पैनल (b) में दर्शाया गया है, कोई भी विस्तारकारी नीति संतुलन उत्पादन में मामूली वृद्धि (Y_0 से Y_1 तक) परंतु संतुलनकीमत स्तर में कहीं अधिक वृद्धि (P_0 से P_1 तक) के रूप में दिखाई देगी। ऐसी दशाओं में कोई भी विस्तारकारी नीति भली-भाँति काम नहीं करती। जब आर्थिक संवृद्धि कम होती है तो मुद्रास्फीति कहीं अधिक तेजी से बढ़ती है। हम स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि इस प्रकार की स्थिति आने के पीछे क्या कारण होता है। जब राजकीय व्यय में कोई वृद्धि होती है तो वस्तु व सेवाओं की अप्रत्याशित माँग दिखाई पड़ती है, जिसके परिणामस्वरूप फर्मों की वस्तु-सूचियों में गिरावट दर्ज की जाती है। फर्म अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए पहले से अधिक श्रमिक काम पर रखने और पहले से अधिक कच्चा माल खरीदने का प्रयास करती हैं। परिणामतः, वेतन दर और कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि देखी जाती है, जो कि अर्थव्यवस्था में कीमत-स्तर वृद्धि की ओर अग्रसर करता है। कीमत स्तर में वृद्धि मुद्रा की माँग में परिणत होती है, जो कि (स्थिर मुद्रा आपूर्ति के साथ) ब्याज दर में वृद्धि की ओर अग्रसर करता है, जिससे नियोजित निवेश घटने लगता है। आगे हम इस तथ्य का विशद विश्लेषण करेंगे।

जैसा कि आप जानते हैं, किसी भी अर्थव्यवस्था में उपलब्ध संसाधन (यथा, पूँजी, श्रमिक, कच्चा माल) सीमित ही होते हैं। व्यापार मंदी के दौरान, अर्थव्यवस्था में अप्रयुक्त संसाधन देखे जाते हैं। तदनुसार, फर्मों के पास निवेश करने के लिए पर्याप्त आगत उपलब्ध होते हैं। जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार स्तर के आसपास ही चल रही हो तो स्थिति भिन्न होती है। जब ऐसी परिस्थितियों में राजकीय व्यय बढ़ता है तो सरकार बाजार में उपलब्ध सीमित संसाधनों के लिए निजी क्षेत्र के साथ होड़ करने लगती है। ऐसे में ब्याज दर, वेतन दर और कीमतों में वृद्धि दिखाई देने लगती है। अब निजी क्षेत्र को और निवेश करना अव्यवहार्य लगने लगता है। प्रायः इसे 'संकुलन प्रभाव' अर्थात् 'स्थानाभाव के कारण प्रवेश असंभव प्रभाव' कहा जाता है।

यदि LRAS वक्र ऊर्ध्वस्थ होता है तो राजकीय व्यय बढ़ाने जैसी कोई भी नीतिगत कार्यवाही सहज ही कीमत स्तर बढ़ा देती है। चूँकि फर्म पूर्ण क्षमता से उत्पादन कर रही हैं, कीमतें और ब्याज दरें तब तक बढ़ेंगी जब तक कि राजकीय व्यय पूरी तरह नियोजित

निवेश में गिरावट के बराबर नहीं आ जाता और स्थानाभाव के कारण प्रवेश पूर्णतः असंभव नहीं हो जाता।

संकुचनकारी राजकोषीय अथवा मौद्रिक नीति के उदाहरण में AD वक्र में खिसकाव बाईं ओर होता है। यह कीमत और उत्पादन के संतुलन स्तर में नीचे की ओर अग्रसर करता है। पुनः, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण होगा कि अर्थव्यवस्था कहाँ चल रही है : AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक समतल भाग पर अथवा AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक ढलान भाग पर। दीर्घावधि में, कोई भी संकुचनकारी नीति केवल कीमत स्तर को घटाएगी और उत्पादन स्तर पूर्ण रोजगार स्तर पर बना रहेगा।

6.5 स्थिति अध्ययन

आपको सैद्धांतिक ज्ञान का संबंध उन व्यावहारिक दशाओं अथवा वैश्विक चिंत्य विषयों से जोड़ने में सक्षम होना चाहिए जो अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। सरकार की एक महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका, जैसा कि आप जानते ही हैं, आर्थिक संवृद्धि, कीमत स्तर और रोजगार में स्थिरता कायम रखना होता है। आइए, देखें कि किस प्रकार राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों से लाभ उठाया जाता है।

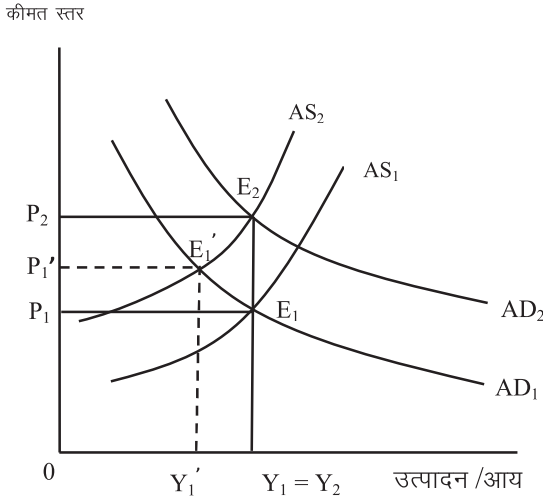
6.5.1 आपूर्ति आघात

पिछले चालीस वर्षों में विश्व बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई, जिसे प्रायः 'तेल संकट' की संज्ञा दी जाती है। चूँकि कच्चा तेल अनेक उत्पादों के लिए एक अनिवार्य आगत है, तेल संकटों के दौरान इन उत्पादों की उत्पादन लागत में तेजी से उछाल आता देखा गया। इसके अलावा, अनेक देश कच्चे तेल के आयात पर ही निर्भर हैं। तेल संकटों के दौरान इन देशों की भुगतान-शेष स्थिति बेहद डावाँडोल रही। तेल संकटों अथवा इस प्रकार की अन्य परिस्थितियों की वजह से उत्पन्न आपूर्ति आघात (supply shock) को नियंत्रित करना नीति-निर्माताओं के लिए टेढ़ी खीर ही रहा है।

मान लेते हैं कि अर्थव्यवस्था AS_1 और AD_1 के संतुलन उत्पादन और कीमतों के साथ काम कर रही है। यहाँ संतुलन क्रमशः Y_1 और P_1 के संतुलन उत्पादन और कीमतों के साथ E_1 पर है। मान लीजिए कि अर्थव्यवस्था एक आपूर्ति आघात झेल रही है। इससे AS वक्र खिसककर AS_0 से AS_1 पर आ जाएगा (देखें चित्र 6.5), जिसके फलस्वरूप संतुलन खिसककर E_1 से E_1' पर आ जाएगी। यह अर्थव्यवस्था को Y_1' के निम्नतर उत्पादन और P_1' के उच्चतर कीमत स्तर वाला बनाकर छोड़ेगा। मुद्रास्फीति अनेक रंग-रूप में नजर आती है, जिस पर चर्चा हम इस पाठ्यक्रम की इकाई 7 में करेंगे। आपूर्ति आघात के उदाहरण में हम मुद्रास्फीति को लागत-प्रहार अथवा आपूर्ति-पक्ष मुद्रास्फीति के रूप में देखेंगे। यदि हम यह मानकर चलें कि सरकार राजकोषीय अथवा मौद्रिक नीति में परिवर्तन कर कुल आपूर्ति में इस परिवर्तन पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करती तो AD वक्र भी नहीं खिसकेगा।

जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया, सरकारें मौद्रिक नीति उपाय (यथा, मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि और ब्याज दर में कमी) तथा राजकोषीय नीति उपाय (यथा, सरकारी खर्च में वृद्धि और कर दर में कमी) करती हैं। परिणामतः, AD वक्र दाएँ खिसक जाएगा। चित्र 6.5 में हम यह मानकर चलते हैं कि AD वक्र खिसककर AD_1 से AD_2 पर चला जाता है। फलतः, संतुलन खिसककर E_1' से E_2 पर चली जाती है। तदनुसार, सरकार अर्थव्यवस्था को फिर से पटरी पर लाने का प्रयास करेगी। सरकारी नीति उपायों के फलस्वरूप उत्पादन बढ़ेगा।

इस नीति के साथ, बहरहाल, समस्या यह है कि AS_2 और AD_2 वक्रों का प्रतिच्छेदन कहीं ऊँचे कीमत स्तर पर दिखाई देता है। जैसा कि आप चित्र 6.5 में देखेंगे, यहाँ संतुलन उत्पादन Y_1 , होता है, परंतु संतुलन कीमत P_2 होता है।



चित्र 6.5: लागत आघात और नीति प्रभाव

इसका परिणाम अर्थव्यवस्था में 'मुद्रास्फीति—जनित मंदी' (इस पद का अभिप्राय उत्पादन में गतिहीनता और मुद्रास्फीति के संयोजन से होता है) की स्थिति में दिखाई देता है। अर्थव्यवस्था उत्पादन में गतिहीनता और मुद्रास्फीति दोनों का ही अनुभव करेगी। 1970 के दशक में मुद्रास्फीतिजनित मंदी की समस्या सर्वप्रथम देखी गई। तदंतर, अनेक देशों में मुद्रास्फीतिजनित गतिरोध की स्थिति देखने में आई।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि आपूर्ति आघात नीति—निर्माताओं के लिए अशुभ समाचार के द्योतक ही होते हैं। यदि सरकार इसे गंभीरता से नहीं लेती तो उत्पादन गिर जाता है। यदि सरकार विस्तारकारी नीतियों से इसका मुकाबला करने का प्रयास करती है तो कीमत वृद्धि (अर्थात् मुद्रास्फीति) कहीं अधिक होगी।

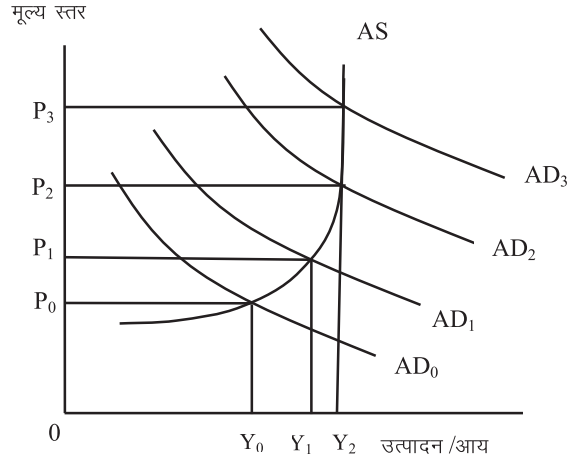
6.5.2 माँग आघात

माँग आघात (demand shock) सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी। सकारात्मक माँग आघात के उदाहरण हैं — कर कटौतियाँ, ब्याज दर कटौतियाँ, राजकीय प्रोत्साहन पैकेज, आदि। नकारात्मक माँग आघात के उदाहरण हैं — प्राकृतिक आपदाएँ, शेयर बाजार का गिरना, आदि। जबकि सकारात्मक माँग आघात AD वक्र को दाएँ खिसका देता है, नकारात्मक माँग आघात AD वक्र को नीचे की ओर बाएँ खिसकाता है। इस AD वक्र की आकृति पर निर्भर करते हुए, कुल माँग में वृद्धि उत्पादन और कीमतों दोनों की वृद्धि में परिणत होती है। चलिए, एक सकारात्मक माँग आघात के उदाहरण पर विचार करते हैं।

पिछले खण्ड में हमने बताया कि AS वक्र का वह खंड जिसमें अर्थव्यवस्था चल रही हो, बहुत महत्वपूर्ण होता है। ऐसी स्थिति में जबकि अर्थव्यवस्था AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक समतल भाग में दर्शायी जा रही हो और कुल माँग में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही हो तो प्रभाव उत्पादन पर अधिक और कीमतों पर कम पड़ेगा। इसके विपरीत, यदि अर्थव्यवस्था AS वक्र के ऊर्ध्वस्थ भाग पर दर्शायी जा रही हो तो कुल माँग में वृद्धि का प्रभाव बड़ी कीमतों के लिहाज से अधिक होगा और उत्पादन में शायद कोई बढ़ोतरी न दिखाई दे (देखें खण्ड 6.4)।

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर

चित्र 6.6 में, अर्थव्यवस्था AS और AD_0 वक्रों के साथ काम कर रही है। संतुलन उत्पादन और कीमतें क्रमशः Y_0 और P_0 हैं। एक सकारात्मक माँग आघात की वजह से, मान लीजिए कि AD वक्र खिसककर AD_0 से AD_1 पर चला जाता है। परिणामतः, संतुलन उत्पादन और कीमतें बदलकर क्रमशः Y_1 और P_1 हो जाती हैं।



चित्र 6.6: माँग आघात और सतत मुद्रास्फीति

यदि कुल माँग बढ़ती रहती है (माना निर्यात अथवा राजकीय प्रोत्साहन पैकेज में वृद्धि के कारण) तो AD वक्र खिसककर AD_1 से AD_2 पर चला जाता है और फिर AD_2 से AD_3 पर। उत्पादन में वृद्धि Y_2 से आगे जारी नहीं रहेगी, जो कि पूर्ण-रोजगार उत्पादन स्तर है। तदंतर, कुल माँग में वृद्धि से कीमतें बढ़ेंगी, और अर्थव्यवस्था माँग-जन्य मुद्रास्फीति के दौर में चली जा सकती है। ध्यान देने की बात है कि कुल माँग में किसी वृद्धि द्वारा लाई गई महँगाई ही माँग-जन्य मुद्रास्फीति कहलाती है।

जब कुल उत्पादन बढ़ता है तो सरकार को मुद्रा आपूर्ति अवश्य बढ़ानी चाहिए अन्यथा ब्याज दर में वृद्धि हो जाएगी (देखें BECC 133: समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I में इकाई 9 का खण्ड 9.5)। अर्थशास्त्री आम तौर पर यह मानते हैं कि किसी भी सतत मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न होते देखने के लिए केन्द्रीय बैंक ही उसे अनुकूल बनाता है। इस लिहाज से, किसी भी सतत मुद्रास्फीति की स्थिति को एक पूर्णतः मौद्रिक दृश्यघटना माना जा सकता है। मान लीजिए कि केन्द्रीय बैंक ब्याज दर स्थिर रखने के लिए मुद्रा आपूर्ति बढ़ाने का फैसला करता है। जब उच्चतर कीमत स्तर (P_1) मुद्रा की माँग बढ़ा देता है तो केन्द्रीय बैंक मुद्रा आपूर्ति बढ़ा देता है। इसका उद्देश्य किसी उच्चतर ब्याज दर के 'संकुलन प्रभाव' का निराकरण हो सकता है। जब मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है तो AD वक्र पुनः दाएँ खिसककर AD_1 से AD_2 पर आ जाता है (देखें चित्र 6.6)। इस AD वक्र का यह खिसकाव जो बढ़ी मुद्रा आपूर्ति की वजह से हुआ, कीमतों में और उछाल ला देता है। ऊँची कीमतें अब मुद्रा की माँग और बढ़ा देती हैं, जिसमें और अधिक मुद्रा आपूर्ति की अपेक्षा होती है और यह सिलसिला चलता ही रहता है। यह स्थिति उत्पादन के संतुलनस्तर में अधिक कोई वृद्धि किए बिना ही सतत मुद्रास्फीति की ओर ले जाती है।

राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों की भूमिका उस समय नीति उपायों के माध्यम से कुल माँग में वृद्धि नियंत्रित करना होता है जब अर्थव्यवस्था पूर्ण-रोजगार उत्पादन स्तर पर काम कर रही हो। सरकार को किसी संकुचनकारी राजकोषीय एवं मौद्रिक नीति का सहारा लेना पड़ता है। राजकीय व्यय में कमी, कर दर में बढ़ोतरी और ब्याज दर में वृद्धि कुल माँग घटाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

जब अर्थव्यवस्था उत्पादन के निचले स्तर पर काम कर रही हो तो, बहरहाल, सरकार को सार्वजनिक व्यय बढ़ाकर कुल माँग में वृद्धि करनी पड़ती है। हाल के वर्षों में, वर्ष 2020 के दौरान, जब विश्व कोविड-19 महामारी से जूझ रहा था, अनेक देशों में वहाँ की सरकार प्रोत्साहन पैकेज लेकर आई। इसका उद्देश्य कुल माँग बढ़ाना ही तो था।

बोध प्रश्न 2

- 1) संतुलनकीमत एवं उत्पादन स्तर पर विस्तारकारी राजकोषीय नीति का प्रभाव स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

- 2) स्पष्ट करें कि किस प्रकार AS वक्र की आकृति राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों को प्रभावित करती है।

.....

.....

.....

.....

.....

- 3) व्याख्या करें कि किस प्रकार तेल संकट के दौरान अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण रखना कठिन होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

- 4) एक आरेख के माध्यम से मुद्रास्फीतिजनित मंदी की प्रक्रिया का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 सार—संक्षेप

इस इकाई में हमने स्पष्ट किया कि किस प्रकार कोई अर्थव्यवस्था अल्पावधि और दीर्घावधि में उत्पादन और कीमतों के संतुलन स्तरों पर पहुँचती है। हमने उत्पादन अंतराल और उत्पादन के संतुलनस्तर से उसके संबंध से जुड़ी संकल्पना को स्पष्ट किया।

हमने अर्थव्यवस्था में उत्पादन अंतराल दिखाई पड़ने पर, अल्पावधि संतुलन से दीर्घावधि संतुलन की ओर परिवर्तन प्रक्रिया पर चर्चा भी की। उत्पादन और कीमतों के संतुलन स्तरों पर राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों का प्रभाव आरेखों के माध्यम से स्पष्ट किया गया। सैद्धांतिक ज्ञान का संबंध वास्तविक जगत की समस्याओं से दर्शाने के लिए, हमने नीतिगत कार्यवाहियों के लिहाज से दो स्थिति अध्ययन भी प्रस्तुत किए।

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

- 1) अल्पावधि संतुलन AD वक्र और अल्पावधि AS वक्र (धनात्मक ढलान) के प्रतिच्छेदन से दर्शाई जाती है। इस प्रकार ज्ञात उत्पादन को वास्तविक जीडीपी अथवा उत्पादन का वास्तविक स्तर कहा जाता है।
- 2) दीर्घावधि संतुलन AD वक्र और दीर्घावधि AS वक्र (ऊर्ध्वस्थ) के प्रतिच्छेदन से दर्शाई जाती है। इस प्रकार ज्ञात उत्पादन संभावित जीडीपी अथवा उत्पादन का पूर्ण रोजगार स्तर कहलाता है।
- 3) उत्पादन अंतराल उत्पादन के संभावित स्तर और उत्पादन के वास्तविक स्तर के बीच अंतर को कहा जाता है।
- 4) वास्तविक उत्पादन स्तर उत्पादन के संभावित स्तर के दाएँ देखा जाता है। वेतन दरें बढ़ेंगी और अल्पावधि AS वक्र बाएँ खिसक जाएगा। जब वेतन दरें पूर्णतः समंजित होती हैं तो AS वक्र इस भाँति खिसकेगा कि उत्पादन, कालांतर में, संभावित स्तर पर वापस आ जाएगा। अतः जब वेतन दरें कीमतों के प्रति पूर्णतः समंजित होती हैं, तब संतुलन दीर्घावधि कुल आपूर्ति वक्र पर होती है, जो कि उत्पादन का पूर्ण रोजगार स्तर दर्शाता है।

बोध प्रश्न 2

- 1) विस्तारकारी राजकोषीय नीति AD वक्र को दाएँ खिसका देती है। यदि अर्थव्यवस्था पूर्ण-रोजगार स्तर उत्पादन से नीचे चल रही हो, विशेषकर AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक समतल भाग पर, तो कीमत वृद्धि कम होती है जबकि उत्पादन वृद्धि अधिक। परंतु यदि अर्थव्यवस्था क्षमता स्तर के नजदीक (पूर्ण रोजगार स्तर) और AS वक्र के अपेक्षाकृत अधिक ढालू भाग पर चल रही हो तो कीमत वृद्धि अधिक होती है जबकि उत्पादन वृद्धि कम।
- 2) हाँ, AS वक्र की आकृति परिणाम को प्रभावित करती है, जैसा कि ऊपर प्रश्न 1 के उत्तर में उल्लेख किया गया है।
- 3) तेल संकट आपूर्ति आघात का एक परंपरागत उदाहरण है। सरकार कोई विस्तारकारी नीति लाने का प्रयास कर सकती है परंतु पहले से अधिक महँगाई प्रतिकूल गौण प्रभाव के रूप में सामने आएगी। अतः आपूर्ति आघात नीति-निर्माताओं के लिए कोई अच्छी खबर नहीं होती।
- 4) मुद्रास्फीतिजनित मंदी उस वक्त दिखाई पड़ती है जब अर्थव्यवस्था व्यापार मंदी और मुद्रास्फीति दोनों का एक साथ अनुभव कर रही हो। आपूर्ति आघात के रूप में तेल संकट यथा तथ्य रूप से मुद्रास्फीतिजनित मंदी को जन्म देता है।